साप्ताहिक

सबका जम्मू कश्मीर

आरएनआई न. :- जेकेएचआईएन/25/ए0631

हिन्दी • वर्षः 1 • अंकः 9 • कठुआ, शनिवार 26 जुलाई 2025 • पृष्ठः 16 • मूल्यः 5 रुपए

लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने वालों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए : प्रधानमंत्री मोदी

सबका जम्मू कश्मीर

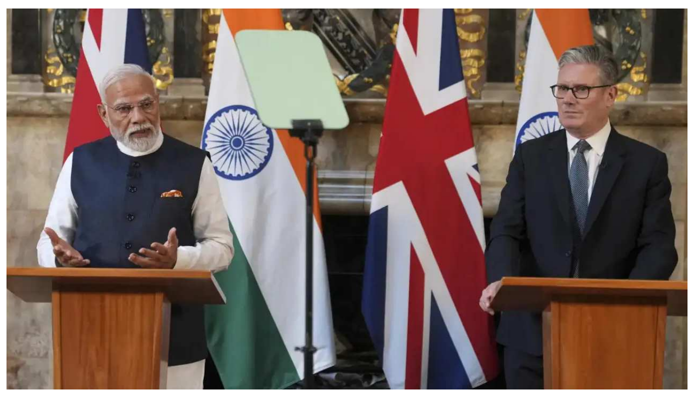

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को अपने ब्रिटिश समकक्ष कीर स्टारमर से मुलाकात के बाद कहा कि ''चरमपंथी विचारधाराओं'' वाली ताकतों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यह टिप्पणी ब्रिटेन में खालिस्तानी समर्थक तत्वों की गतिविधियों को लेकर भारत में बढ़ती चिंता के बीच आई है।

स्टार्मर के साथ मोदी ने यह भी कहा कि भारत और ब्रिटेन दोनों इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। उन्होंने पहलगाम आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए ब्रिटिश सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने यह टिप्पणी स्टारमर द्वारा चेकर्स में उनकी मेजबानी के बाद की, जो लंदन से 50 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित ब्रिटिश प्रधानमंत्री का ग्रामीण आवास है। मोदी ने अपने मीडिया वक्तव्य में कहा, ष्हम इस बात पर सहमत हैं कि अतिवादी विचारधारा वाली ताकतों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। जो लोग लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।ष

ब्रिटेन में खालिस्तानी समर्थक तत्वों की गतिविधियों को लेकर भारत में चिंताएं बढ़ रही हैं, खासकर मार्च 2023 में लंदन में भारतीय उच्चायोग पर हमले के बाद।

भारत ब्रिटिश धरती पर खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों पर ब्रिटेन के समक्ष अपनी चिंता व्यक्त करता रहा है। ऐसा पता चला है कि प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता में यह मुद्दा उठा था।

प्रधानमंत्री ने आतंकवाद की चुनौती का दृढ़ता से सामना करने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

मोदी ने कहा, ष्हम पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए प्रधानमंत्री स्टारमर और उनकी सरकार को धन्यवाद देते हैं। हम इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंडों

■ शेष पेज 2...

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने स्वास्थ्य कारणों से दिया इस्तीफा, राष्ट्रपति को पत्र लिखकर जताया आभार

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सोमवार को स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए अपने पद से तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को संबोधित पत्र के माध्यम से सौंपा, जिसमें उन्होंने संवैधानिक प्रावधान अनुच्छेद 67(क) का उल्लेख करते हुए अपने निर्णय की जानकारी दी।

अपने पत्र में धनखड़ ने कहा कि उन्होंने चिकित्सकीय सलाह को ध्यान में रखते हुए यह कदम उठाया है। उन्होंने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्रिपरिषद और संसद के सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए अपने कार्यकाल को ष्सम्मान और सीख से भरपूरष बताया। उपराष्ट्रपति ने पत्र में लिखा, ष्माननीय राष्ट्रपति जी के साथ कार्य करते हुए मुझे जो सहयोग और सकारात्मक संबंध मिले, वे मेरे

■ शेष पेज 2...

ऑपरेशन सिंदूर : सरकार ने संसद को बताया कि भारत की कार्रवाई नपी-तुली और गैर-बढ़ी हुई थी

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : सरकार ने गुरुवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ष्पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियोंष द्वारा किए गए ष्बर्बरष हमले के जवाब में शुरू किया गया था और यह कार्रवाई आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करने और भारत में भेजे जाने वाले आतंकवादियों को बेअसर करने पर केंद्रित थी।

राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने भी कहा कि भारत की कार्रवाई ष्केंद्रित, नपी–तुली और गैर–बढ़ाने वालीष थी।

विदेश मंत्रालय से पूछा गया कि क्या यह सच है कि ऑपरेशन सिंदूर की घोषणा ष्अंतर्राष्ट्रीय दबाव मेंष की गई थी, और इस संबंध में ष्तथ्यात्मक स्थितिष क्या है।

राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन ने भी ऑपरेशन सिंदूर में युद्ध विराम की अचानक घोषणा से भारतीय सेना के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में पूछा, जो महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर रही थी, लेकिन अचानक युद्ध विराम की घोषणा करना उनके मनोबल और देश के लोगों की भावनाओं के खिलाफ था।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा सीमा पार से किए गए बर्बर आतंकी हमले का जवाब

■ शेष पेज 2...

उपराज्यपाल ने युवाओं से भारत की प्रगति में योगदान देने का आह्वान किया

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू : उपराज्यपाल ने कहा, ष्युवा जम्मू–कश्मीर के उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे और दीर्घकालिक शांति एवं समृद्धि सुनिश्चित करेंगे। इस 21वीं सदी में, निरंतर परिवर्तन और चुनौतियों के बावजूद, हमारे युवा – हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति – ही हैं जो सामाजिक–आर्थिक क्रांति को गति देने की शक्ति रखते हैं। अनंत संभावनाओं से भरपूर जम्मू–कश्मीर अपने महत्वाकांक्षी युवाओं को प्रचुर संसाधनों और अवसरों से सशक्त बना रहा है।ष

राष्ट्र–प्रथम के संकल्प के साथ आगे बढ़ें। माननीय प्रधानमंत्री के ष्पंच प्रणष संकल्प को अपनाएँ। पहल, नेतृत्व, आत्मविश्वास, दृढ़ता, कल्पनाशीलता और असफलता से सीखने का साहस जैसे गुण आपको विकसित भारत की यात्रा पर मार्गदर्शन करेंगे, उपराज्यपाल ने युवाओं से कहा।

उन्होंने आईयूएसटी के कुलपति और संकाय सदस्यों को पिछले कुछ वर्षों में प्रगतिशील सुधारों को लागू करने के लिए बधाई दी, जिससे जम्मू–कश्मीर के उच्च शिक्षा क्षेत्र में बदलाव आया है और देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों को प्रेरणा मिली है। उन्होंने कहा कि यह सही समय है जब आईयूएसटी

■ शेष पेज 2...

फर्जी मुठभेड़ में आदिवासी युवक की मौत पर मचा हड़कंप, मंत्री जावेद अहमद राणा ने दिलाया न्याय का भरोसा

सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू : जम्मू में कथित फर्जी मुठभेड़ में एक आदिवासी युवक की मौत से हड़कंप मच गया है। मृतक की पहचान मोहम्मद परवेज के रूप में हुई है। मामले को गंभीरता से लेते हुए जम्मू–कश्मीर सरकार के जल शक्ति, वन, पर्यावरण व जनजातीय कार्य मंत्री जावेद अहमद राणा ने सख्त रुख अपनाया है।

मंत्री राणा ने मामले की गंभीरता को देखते हुए डिविजनल कमिश्नर और आईजीपी जम्मू से तुरंत बात की और पूरे घटनाक्रम की पारदर्शी जांच

■ शेष पेज 2...

विपक्ष के हंगामे के बीच दोनों सदन चौथे दिन भी स्थगित

सबका जम्मू कश्मीर

नई दिल्ली : बिहार में चल रही विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया को वापस लेने और ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा की मांग को लेकर विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बाद आज लगातार चौथे दिन संसद के दोनों सदनों की कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई।

दोपहर दो बजे जैसे ही लोकसभा की कार्यवाही पुनः शुरू हुई और पीठासीन अधिकारी कृष्ण प्रसाद टेनेटी ने सदन की कार्यवाही शुरू करने का आह्वान किया, विपक्षी सदस्य अपनी मांगों के समर्थन में तख्तियां लेकर

■ शेष पेज 2...

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

शेष पेज 1 से.....

लोकतांत्रिक स्वतंत्रता...

के लिए कोई जगह नहीं हो सकती।

ऐसा समझा जाता है कि वार्ता में सीमापार आतंकवाद की भारत की चुनौती पर भी चर्चा हुई।

मोदी और स्टार्मर के बीच बातचीत मुख्यतः व्यापार, निवेश, रक्षा एवं सुरक्षा, शिक्षा और स्वच्छ प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने पर केंद्रित रही।

दोनों पक्षों ने एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य दोनों अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देना, 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर टैरिफ में कटौती करना, हजारों नौकरियों के अवसर पैदा करना तथा ब्रिटिश व्हिस्की, कारों और अन्य वस्तुओं पर टैरिफ में कटौती करना है।

इस समझौते को आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (सीईटीए) नाम दिया गया है, जिस पर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और ब्रिटिश व्यापार सचिव जोनाथन रेनॉल्ड्स ने भारत और ब्रिटेन के प्रधानमंत्रियों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

अधिकारियों ने बताया कि तीन वर्षों की बातचीत के बाद तैयार किए गए सीईटीए से सभी क्षेत्रों में भारतीय वस्तुओं के लिए व्यापक बाजार पहच सुनिश्चित होने की उम्मीद है और भारत को लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों (उत्पाद श्रेणियों) पर टैरिफ उन्मूलन से लाभ होगा, जो लगभग 100 प्रतिशत व्यापार मूल्यों को कवर करेगा।

उपराष्ट्रपति जगदीप...

लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहे हैं। प्रधानमंत्री और उनकी मंत्रिपरिषद से प्राप्त समर्थन अमूल्य रहा, जिससे मैंने बहुत कुछ सीखा।ष

धनखड़ ने संसद सदस्यों से मिले स्नेह और विश्वास को अपने जीवन की ष्अमूल्य स्मृतिष बताया। उन्होंने कहा कि उपराष्ट्रपति के रूप में भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में योगदान देना उनके लिए सौभाग्य की बात रही।

उन्होंने अपने कार्यकाल को भारत के आर्थिक प्रगति और वैश्विक स्तर पर उभरते प्रभाव का साक्षी बताया और कहा कि वह गर्व और आशा के साथ यह पद छोड़ रहे हैं।

पत्र के अंत में उन्होंने भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अडिग विश्वास जताया और देश की निरंतर सफलता की कामना की

फर्जी मुठभेड़...

के आदेश दिए हैं। उन्होंने साफ किया कि इस संवेदनशील मुद्दे पर कोई कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

सरकार की ओर से इस पूरे मामले की जांच शुरू कर दी गई है ताकि सच्चाई सामने लाई जा सके और पीड़ित परिवार को न्याय मिल सके। इस बीच मंत्री राणा ने पीड़ित परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की और कहा कि इस दुख की घड़ी में सरकार उनके साथ खड़ी है।

मंत्री राणा ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए कहा,

"माननीय मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला साब के नेतृत्व में जम्मू–कश्मीर सरकार इस मामले में हर हाल में न्याय सुनिश्चित करेगी।"

जनजातीय मामलों के मंत्री के रूप में राणा ने स्पष्ट किया कि उमर अब्दुल्ला की सरकार जनजातीय समुदाय के अधिकारों और सम्मान की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

उपराज्यपाल ने ...

को सेमीकंडक्टर लैब स्थापित करने पर काम करना चाहिए।

उपराज्यपाल ने आगे कहा, ष्हम विकसित भारत का संकल्प तभी प्राप्त कर सकते हैं जब जम्मू–कश्मीर विकसित हो, हमारे जिले विकसित हों, और सबसे महत्वपूर्ण बात, हमारे विश्वविद्यालय विकसित हों और हमारी आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। मुझे गर्व है कि आईयूएसटी इस संकल्प के साथ पूरी निष्ठा और भावना से काम कर रहा है।ष

सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उपराज्यपाल ने युवाओं से आग्रह किया कि वे सरदार पटेल की परिकल्पना के अनुरूप भारत के उज्जवल भविष्य और समावेशी समाज के निर्माण के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित करें।

उपराज्यपाल ने नशीली दवाओं के खतरे से निपटने के अपने संकल्प को भी दोहराया और जम्मू–कश्मीर के प्रत्येक विश्वविद्यालय को नशा मुक्त बनाने का दृढ़ संकल्प लिया।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि केवल नशामुक्त परिसर ही राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं, यह लक्ष्य कुछ प्रमुख पहलों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

नशा–विरोधी अभियान प्रवेश स्तर से ही शुरू होना चाहिए और हर छात्र को नशे से दूर रहने की शपथ लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हर विश्वविद्यालय को संकाय सदस्यों की देखरेख में एक श्नशे को ना कहें छात्र समितिश स्थापित करनी चाहिए, जो एक प्रारंभिक चेता. वनी तंत्र के रूप में काम करेगी।

विश्वविद्यालयों को एक गोपनीय रिपोर्टिंग प्रणाली बनानी चाहिए और ज़रूरतमंद छात्रों को टेली–मानस जैसी हेल्पलाइनों के ज़रिए सहायता की सुनिश्चित पहुँच प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि परामर्श और सहायता प्रणालियों के अलावा, नशामुक्ति विषयक सामग्री को भी शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

उपराज्यपाल ने विकसित भारत युवा संसद और वाद–विवाद प्रतियोगिताओं सहित पूर्व–कार्यक्रमों के विजेताओं को सम्मानित किया और 12 अगस्त को होने वाले मुख्य कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएँ दीं। इस महत्वपूर्ण दिन पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ष्विकसित भारत – युवा कनेक्ट कार्यक्रमष का औपचारिक शुभारंभ करेंगे, जिसम. े वे एक साथ 1,339 विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों से जुड़ेंगे।

इस अवसर पर, उपराज्यपाल ने राष्ट्र की प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए, सभी को विकसित भारत शपथ दिलाई। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रकाशन और शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा विश्वविद्यालय को भविष्य के लिए तैयार करने हेतु आईयूएसटी की संस्थागत विकास योजना का भी विमोचन किया।

आईयूएसटी के कुलपति प्रोफेसर शकील अहमद रोमशू ने एक विशेष प्रस्तुति दी कि किस प्रकार विकसित भारत/2047 के विजन को विश्व. विद्यालय की संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) में एकीकृत किया जा रहा है, जिसमें विभाग और केंद्र स्तर तक प्रशासनिक, शैक्षणिक, अनुसंधान और आउटरीच गतिविधियों को शामिल किया गया है।

छात्रों के बीच एक खुला संवाद सत्र, युवा संवाद भी आयोजित किया गया, जिसमें नागरिक जिम्मेदारियों, राष्ट्रीय विकास और वर्तमान मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसके बाद "सरदार /150" वीडियो का प्रदर्शन किया गया, जो सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन और विरासत को एक दृश्य श्रद्धांजलि थी।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री शांतमनु, पुलवामा के उपायुक्त श्री बशारत कयूम, शैक्षणिक मामलों के डीन प्रोफेसर एएच मून, आईयूएसटी के रजिस्ट्रार प्रोफेसर अब्दुल वाहिद, वरिष्ठ अधिकारी, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

विपक्ष के हंगामे के...

सदन के बीचोंबीच आ गए और नारेबाजी करने लगे।

टेनेटी ने सदस्यों से अपनी सीटों पर लौटने और गोवा की अनुसूचित जनजातियों से संबंधित विधेयक पर चर्चा में भाग लेने का आग्रह किया, जो आज होने वाली थी।

उन्होंने कहा कि यह विधेयक कल भी चर्चा के लिए सूचीबद्ध था, लेकिन विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण चर्चा नहीं हो सकी।

इस बीच, विधि एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि अनुसूचित जनजातियों से संबंधित एक महत्वपूर्ण विधेयक चर्चा एवं पारित होने के लिए सूचीबद्ध है, लेकिन विपक्ष को अनुसूचित जनजातियों के हितों की कोई चिंता नहीं है।

उन्होंने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण विधेयक है क्योंकि पहली बार गोवा की अनुसूचित जनजातियों को प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए एक कानून पेश किया गया है।

पीठासीन अधिकारी ने कहा कि कल भी गोवा राज्य अनुसूचित जनजा. ति प्रतिनिधित्व पुनर्समायोजन विधेयक, 2014 चर्चा और पारित होने के लिए लाया गया था, लेकिन सदन को चलने नहीं दिया गया। उन्होंने आगे कहा, ष्जब तक आप लोग तख्तियाँ दिखाते रहेंगे, सदन की कार्यवाही नहीं चल सकती। आप सभी कृपया अपनी सीटों पर वापस जाएँ और विधेयक पर चर्चा में भाग लें।ष

विपक्षी सदस्यों के लगातार विरोध के कारण लोकसभा की कार्यवाही शुक्रवार तक के लिए स्थगित कर दी गई।

इससे पहले, बिहार में एसआईआर प्रक्रिया को वापस लेने की मांग को लेकर विपक्षी सदस्यों के हंगामे के बाद लोकसभा की कार्यवाही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

इस बीच, बिहार में मतदाता सूची की एसआईआर के खिलाफ विपक्षी पार्टी के सदस्यों द्वारा विरोध जताए जाने और हंगामा करने के बाद राज्यसभा की कार्यवाही भी दिन भर के लिए स्थगित कर दी गई।

जब सदन की कार्यवाही दोपहर 2 बजे पुनः शुरू हुई, तो उपसभापति भुवनेश्वर कलिता ने एआईएडीएमके के एम. थम्बी दुरई को समुद्री माल परिवहन विधेयक, 2025 पर चर्चा शुरू करने के लिए बुलाया। जैसे ही दुरई बोलने के लिए खड़े हुए, विपक्षी सदस्य अपनी सीटों से उठकर आसन के पास आ गए और बिहार में एसआईआर के विरोध में नारे लगाने लगे।

हंगामा बढ़ने पर भाजपा के लक्ष्मीकांत बाजपेयी ने नियम 235 के तहत व्यवस्था का प्रश्न उठाया और विपक्षी सदस्यों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

जवाब में सदन में कांग्रेस के उपनेता प्रमोद तिवारी ने भी नियमों का हवाला देते हुए कहा कि विपक्ष के नेता को सदन में बोलने का मौका नहीं दिया जा रहा है।

कलिता ने विपक्षी सदस्यों से अपनी सीटों पर लौटने की अपील की और सदन में व्यवस्था बनाए रखने का आग्रह किया। जब उनकी अपील का कोई असर नहीं हुआ, तो उन्होंने कार्यवाही पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी।

ऑपरेशन सिंदूर : सरकार....

देने के लिए शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करना और भारत में भेजे जाने वाले संभावित आतंकवादियों को बेअसर करना था।ष

उन्होंने कहा कि हालांकि, पाकिस्तान ने कुछ सैन्य सुविधाओं के अलावा भारतीय नागरिक क्षेत्रों को भी निशाना बनाने का प्रयास किया।

ष्पाकिस्तान की इन उकसावे वाली और आक्रामक कार्रवाइयों का भारतीय सशस्त्र बलों ने कड़ा और निर्णायक जवाब दिया, जिससे पाकिस्तानी सेना को काफी नुकसान हुआ। इसके बाद, 10 मई, 2025 को पाकिस्तान के सैन्य संचालन महानिदेशक ने अपने भारतीय समकक्ष से गोलीबारी और सैन्य गतिविधियों को रोकने का अनुरोध किया, जिस पर उसी दिन बाद में सहमति बन गई,ष राज्य मंत्री ने कहा।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत, भारत ने 7 मई को तड़के सटीक हमलों में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया था। यह कार्रवाई 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला लेने के लिए की गई थी।

एक अलग प्रश्न में विदेश मंत्रालय से यह भी पूछा गया कि क्या मंत्रालय ने विश्व मंच पर पाकिस्तान को अलग–थलग करने के लिए कोई प्रयास किया है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की नियमित वार्षिक प्रक्रिया के तहत, इसके सहायक निकायों और समितियों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों का चयन इसके स्थायी और निर्वाचित अस्थायी सदस्यों में से किया जाता है। सिंह ने बताया कि रूस और फ्रांस के अलावा, पाकिस्तान को 2025 के लिए संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद निरोधी समिति के उपाध्यक्षों में से एक चुना गया है।

उल्लेखनीय है कि भारत 2022 में संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद निरोधी समिति का अध्यक्ष था। इसी प्रकार, भारत 2011–12 के कार्यकाल के दौरान भी इसी समिति का अध्यक्ष था, ऐसा राज्य मंत्री ने कहा।

उन्होंने कहा, ष्भारत सरकार पाकिस्तान से उत्पन्न सीमा पार आतंकवाद के खतरे के बारे में सभी संबंधित वार्ताकारों को संवेदनशील बना रही है। भारत के निरंतर प्रयासों के कारण, वैश्विक समुदाय को सीमा पार आतंकवाद पर भारत की चिंताओं की बेहतर समझ है।ष

मंत्री ने कहा कि भारत के पिछले कई वर्षों के प्रयासों के कारण कई पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों और आतंकवादी संस्थाओं को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की 1267 प्रतिबंध समिति और एफएटीएफ (वित्तीय कार्रवाई कार्य बल) की ष्ग्रे सूचीष में शामिल किया गया है।

उन्होंने कहा कि पहलगाम हमले के बाद संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रेस वक्तव्य में भी आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की गई तथा हमले के अपराधियों, आयोजकों, प्रायोजकों और वित्तपोषकों को जवाब. देह ठहराने की आवश्यकता को स्वीकार किया गया।

पहलगाम हमले के बाद आतंकवाद से निपटने के लिए भारत की कार्रवाई को कई विश्व नेताओं ने मान्यता दी है और उसका समर्थन किया है। उन्होंने बताया कि हाल ही में, अमेरिका ने पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूह लश्कर–ए–तैयबा के प्रतिनिधि, द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) को एक विदेशी आतंकवादी संगठन और एक विशेष रूप से नामित वैश्विक आतंकवादी घोषित किया है।

छड़ी मुबारक को अनुष्ठान के लिए शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया

सबका जम्मू कश्मीर

श्रीनगर : भगवान शिव की भगवा वस्त्रधारी पवित्र छड़ी श्छड़ी मुबा. रकश को सदियों पुरानी परंपराओं के अनुसार श्हरियाली अमावस्याश (श्रावण अमावस्या) के अवसर पर विशेष पूजा–अर्चना के लिए गुरुवार को ऐतिहासिक शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया।

महंत दीपेंद्र गिरि के नेतृत्व में छड़ी मुबारक स्वामी अमरनाथ जी को वार्षिक अमरनाथ यात्रा के तहत पूजा–अर्चना के लिए गोपाद्री पहाड़ियों पर स्थित मंदिर ले जाया गया।

गदा के संरक्षक गिरि ने बताया कि छड़ी मुबारक को यहां लाल चौक के निकट दशनामी अखाड़ा स्थित उसके निवास स्थान से मंदिर लाया गया, जहां पूजन किया गया।

उन्होंने कहा कि शंख की ध्वनि से वातावरण में ऊर्जा भर गई और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन किया गया।

गिरि ने बताया कि पवित्र गदा के साथ आए साधुओं ने पूजा में भाग लिया और जम्मू–कश्मीर की शांति और समृद्धि के लिए सामूहिक प्रार्थना भी की गई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को छड़ी मुबारक को देवी के दर्शन के लिए यहां हरि पर्वत स्थित श्शारिका–भवानीश मंदिर भी ले जाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रविवार को यहां श्री अमरेश्वर मंदिर दशनामी अखाड़ा में छड़ी स्थापना की रस्में निभाई जाएंगी, जिसके बाद मंगलवार को नागपंचमी के अवसर पर अखाड़े में छड़ी पूजन किया जाएगा।

महंत पहलगाम, चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी में रात्रि विश्राम के बाद 9 अगस्त को श्रावण पूर्णिमा की सुबह पवित्र गुफा मंदिर में पूजन और दर्शन के लिए पवित्र गदा ले जाएंगे।

गुफा मंदिर में पूजा के बाद अगले दिन पहलगाम में लिद्दर नदी में विसर्जन किया जाएगा।

अधिकारियों ने बताया कि अनंतनाग जिले में स्थित पवित्र अमरनाथ गुफा मंदिर में पूजा–अर्चना के लिए 3,500 तीर्थयात्रियों का एक नया जत्था गुरुवार को भगवती नगर आधार शिविर से रवाना हुआ।

तीर्थयात्रियों का 22वां जत्था, जिसमें 2,704 पुरुष, 675 महिलाएं, 12 बच्चे और 109 साधु–साध्वियां शामिल हैं, कड़ी सुरक्षा के बीच 140 वाहनों के दो काफिलों में आधार शिविर से पहलगाम और बालटाल के लिए रवाना हुआ।

सबका जम्मू कश्मीर के सातवें संस्करण पर भाजपा महामंत्री गोपाल महाजन, नगरी एमसी पूर्व अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी व समाजसेवी दिलीप मेहता ने दी शुभकामनाएं

"निष्पक्ष और सटीक पत्रकारिता लोकतंत्र की रीढ़ है" - गोपाल महाजन, नगरी एमसी पूर्व अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी व समाजसेवी दिलीप मेहता

"सबका जम्मू कश्मीर" साप्ताहिक समाचार पत्र की प्रति पढ़ते भाजपा महामंत्री गोपाल महाजन, नगरी एमसी पूर्व अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी व समाजसेवी दिलीप मेहता।

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : सबका जम्मू कश्मीर हिंदी साप्ताहिक समाच. ार पत्र का सातवां संस्करण शनिवार को प्रकाशित होने के उपरांत सम्पादक राज कुमार ने भाजपा महामंत्री गोपाल महाजन, नगरी म्युनिसिपल कमेटी के पूर्व अध्यक्ष तरसेम पाल सैनी एवं समाजसेवी दिलीप मेहता से औपचारिक भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने समाच. ार पत्र की प्रति सादर भेंट की।

तीनों गणमान्य व्यक्तियों ने समाचार पत्र की नवीनतम प्रति देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और इसके सफल प्रकाशन पर सम्पूर्ण टीम को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा : "निष्पक्ष और सटीक पत्रकारिता लोकतंत्र की रीढ़ होती है। 'सबका जम्मू कश्मीर' जैसा प्रयास समाज में जागरूकता और सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में अत्यंत सराहनीय है।"

सम्पादक राज कुमार ने बताया कि इस समाचार पत्र का उद्देश्य निष्पक्ष पत्रकारिता को बढ़ावा देना तथा आम जनता की समस्याओं व आवाज को एक सशक्त मंच प्रदान करना है। उन्होंने यह भी कहा कि यह प्रयास आगे भी और अधिक प्रभावी रूप में जारी रहेगा।

गौरतलब है कि ष्सबका जम्मू कश्मीरष् समाचार पत्र का रजिस्ट्रेशन होने के बाद इसकी पहली प्रति 31 मई को प्रकाशित हुई थी। इसके उपरांत लगातार सात संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए जा चुके हैं, जिनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, स्थानीय व क्षेत्रीय समाचारों के साथ विकासात्मक विषयों को भी प्रमुखता दी जा रही है।

कठुआ में भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा का फूल-मालाओं से किया जोरदार स्वागत, संगठन को मजबूत करने का लिया संकल्प

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : भारतीय जनता पार्टी जम्मू–कश्मीर के प्रदेश अध्यक्ष सत शर्मा शुक्रवार को कठुआ पहुंचे, जहां भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका फूल–मालाओं से जोरदार स्वागत किया। जिला स्तरीय कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत कार्यकर्ताओं में जोश और उत्साह के साथ किया गया।

इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबो. धित करते हुए सत शर्मा ने कहा कि भाजपा की ताकत उसका कार्यकर्ता है, और हमें जमीनी स्तर पर संगठन को और सशक्त बनाना है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे पार्टी की नीतियों और योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाएं।

कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश महामंत्री संगीता डोगरा, बलदेव सिंह बलोरिया, गोपाल महाजन, विधायक डॉ. देविंदर मन्याल, कठुआ विधायक डॉ भारत भूषण एवं भाजपा जिला अध्यक्ष उपदेश अंडोत्रा भी उपस्थित रहीं। सभी वरिष्ठ नेताओं ने संगठनात्मक मजबूती और जनसंपर्क बढ़ाने पर जोर दिया।

हजारों की संख्या में जुटे कार्यकर्ताओं ने पार्टी नेतृत्व का गर्मजोशी से स्वागत किया और आगामी चुनावों में भाजपा को मजबूती से स्थापित करने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रवाद, सेवा और संगठन की भावना के साथ हुआ, जिसमें कार्यकर्ताओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया।

कठुआ विधायक डॉ. भारत भूषण ने श्रीनगर में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात, कठुआ की सीवरेज समस्या को लेकर उठाई आवाज

सबका जम्मू कश्मीर

श्रीनगर :कठुआ से भाजपा विधायक डॉ. भारत भूषण ने आज श्रीनगर में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से मुलाकात की और अपने विधानसभा क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। बैठक के दौरान उन्होंने विशेष रूप से कठुआ शहर में सीवरेज व्यवस्था के अभाव को लेकर चिंता जताई और इसे जल्द शुरू कराने की मांग की।

डॉ. भारत भूषण ने मुख्यमंत्री को बताया कि दो लाख से अधिक आबादी वाला कठुआ नगर आज भी बिना सीवरेज सिस्टम के है, जिससे सफाई व्यवस्था चरमराई हुई है और आम नागरिकों का स्वास्थ्य खतरे में है। उन्होंने वर्ष 2020 में हाउसिंग एंड अर्बन डिवेलपमेंट विभाग द्वारा प्रस्तावित 272 करोड़ की वैज्ञानिक सीवरेज परियोजना को दोबारा शुरू करने की मांग की। विधायक ने कहा कि इस परियोजना को अमलीजामा पहनाने से कठुआ में स्वच्छता के साथ–साथ नागरिकों की सेहत और जीवनशैली में भी सुधार आएगा।

इस अवसर पर उन्होंने वित्त आयोग अनुदान (थ्ब् ळतंदजे) के तहत कठुआ में ब्रिज कनेक्टिविटी को सुधारने के लिए मिली धनराशि के लिए मुख्यमंत्री का आभार जताया और मांग की कि अगले दो वर्षों में इन पुलों का निर्माण कार्य पूरा हो सके, इसके लिए अतिरिक्त राशि जारी की जाए।

मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने विधायक को आश्वस्त किया कि जैसे ही आवंटित अनुदानों का पूर्ण उपयोग होगा, आगे की राशि जारी की जाएगी। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हाउसिंग एंड अर्बन डिवेलपमेंट विभाग के साथ कठुआ की सीवरेज योजना को प्राथमिकता के आधार पर उठाया जाएगा।

डॉ. भारत भूषण की इस पहल को कठुआ की जनता ने सराहा है और उम्मीद जताई है कि अब शहर को स्वच्छ और वैज्ञानिक ढंग से विकसित सीवरेज सिस्टम मिलने की राह खुलेगी।

कठुआ विधायक डॉ. भारत भूषण ने विकास कार्यों के लिए जारी किए 200 लाख रूपये, पेयजल और मूलभूत सुविधाओं को मिलेगी रफ्तार

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ, कठुआ विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ. भारत भूषण ने विकास को नई दिशा देते हुए शनिवार 19 जुलाई को क्षेत्र में विभिन्न विकास कार्यों के लिए 200 लाख रुपये जारी किए। इनमें से 100 लाख रुपये विधानसभा क्षेत्र विकास निधि से जबकि शेष 100 लाख रुपये अन्य मदों से स्वीकृत किए गए हैं।

पत्रकारों से बातचीत के दौरान विधायक डॉ. भारत भूषण ने बताया कि यह राशि पेयजल संकट, गली–नाली निर्माण, सड़कों की

मरम्मत एवं पुलिया निर्माण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों पर खर्च की जाएगी। उन्होंने बताया कि यह कार्य विशेषकर कठुआ, नगरी और लखनपुर क्षेत्रों में पेयजल से जूझ रही जनता को राहत पहुंचाने के लिए किए जा रहे हैं।

विधायक ने बताया कि पेयजल संकट को दूर करने के लिए एक करोड़ रुपये की लागत से एफएमयूआर–33 गहरे बोरवेल्स की स्वीकृति दी गई है। यह योजना कठुआ जिले में अपनी तरह की पहली पहल है, जिससे लंबे समय से जल संकट झेल रही आबादी को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। इसके अलावा, कठुआ के उन वार्डों में जहां वर्षों से न तो गली बनी और न नाली, वहां अब विकास कार्यों को गति दी जा रही है। विधायक ने कहा कि जिन स्थानों पर अब तक कोई काम नहीं हुआ या हालात बद से बदतर होते जा रहे थे, वहां प्राथमिकता के आधार पर कार्य शुरू करवाए जाएंगे।

डॉ. भारत भूषण ने साफ किया कि आने वाले समय में जनता की समस्याएं और सुझाव लेकर, योजनाओं को धरातल पर उतारा जाएगा, ताकि क्षेत्र में रह रहे आम लोगों का जीवनस्तर बेहतर हो सके। उन्होंने कहा कि विकास की इस मुहिम में पारदर्शिता और जनसंपर्क को प्राथमिकता दी जाएगी।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

मां शब्द कहां से आया, हर बच्चे के मुंह से पहला शब्द मां ही क्यों निकलता है?

कोई भी बच्चा जब बोलना सीखना शुरू करता है तो शुरुआत में उसके मुंह से म... म...म... की ध्वनि ही निकलती है. यही ध्वनि मां का ध्यान अपनी ओर खींचती है. सीधे-सीधे कहें तो म की ध्वनि ही मां से बच्चे को जोड़ता है. पर आपने कभी सोचा है कि मां शब्द कहां से आया और अलग-अलग भाषाओं में मां को क्या कहते हैं? जानिए, इसका जवाब.

दिनेश पाठक

ऐ अंधेरे देख ले मुंह तेरा काला हो गया, मां ने आंखें खोल दीं घर में उजाला हो गया३ मरहूम शायर मुनव्वर राणा का यह शेर मां की ममता से दुनिया को अवगत कराने के लिए अक्सर इस्तेमाल किया जाता है. दुनिया भर में आज मदर्स डे मनाया जा रहा है. लोग अपनी–अपनी मां को प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे हैं पर मां के बारे में कुछ भी कहना कम ही होता है.

मां को शब्दों से बयां ही नहीं किया जा सकता है. पर आपने कभी सोचा है कि मां शब्द कहां से आया और अलग–अलग भाषाओं में मां को क्या कहते हैं? आइए जानने की कोशिश करते हैं.

मां और बच्चे को जोड़ती है म ध्वनि

कोई भी बच्चा जब बोलना सीखना शुरू करता है तो शुरुआत में उसके मुंह से म३म३म३ की ध्वनि ही निकलती है. यही ध्वनि मां का ध्यान अपनी ओर खींचती है. सीधे–सीधे कहें तो म की ध्वनि ही मां से बच्चे को जोड़ता है. दुनिया भर की भाषाओं की

बात करें तो मां के कई सारे संबोधन हैं. इनमें से जो एक चीज आम है, वह है म और अ ध्वनि.

म ध्वनि निकालना सबसे आसान

दरअसल, कोई नन्हा बच्चा बोलना सीखने से काफी पहले से अ, ब, म, प जैसी ध्वनि निकालने लगता है. इनमें से किसी भी बच्चे के लिए म का उच्चारण सबसे आसान होता है. इन अक्षरों के उच्चारण के लिए जीभ का उच्चारण नहीं करना पड़ता और ओंठों से ही इनकी ध्वनि उत्पन्न होती है. स्तनपान के समय भी मुंह बंद होने पर बच्चे नाक से जो ध्वनि निकालते हैं, वह म ही होती है. चिकित्सा विशेषज्ञों का कहना है कि ये अक्षर बच्चों के लिए एक संकेतक के रूप में काम करता है कि इससे कुछ न कुछ जरूर होगा.

बार–बार दोहराने से आसानी से समझ जाते

साल 2012 में यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलंबिया में एक अध्ययन किया गया था. इसमें पता चला था कि कोई भी बच्चा दादा और मामा जैसी ध्वनियां सुनता है तो उसके दिमाग की क्रियाशीलता बढ़ जाती है. इससे यह खुलासा हुआ कि दूसरी ध्वनियों के मुकाबले एक ही ध्वनि को दोहराने से बच्चे इसे आसानी से पहचान और समझ लेते हैं. म के ममा बनने के पीछे भी यही विज्ञान है.

संस्कृत के मातृ शब्द से हुई उत्पत्ति

जहां तक मां शब्द की उत्पत्ति की बात है तो यह संस्कृत के शब्द मातृ से आया है. इंडो यूरोपियन भाषा फैमिली की सबसे पुरानी भाषाओं में से एक संस्कृत के शब्द मातृ से ही हिन्दी के माता और मां शब्द उत्पन्न हुए हैं. संस्कृत में मां को जहां मातृ, माता कहते हैं, वहीं हिन्दी में मां और माता जैसे कई संबोधन हैं. इसकी कई बोलियों में भी इनका इस्तेमाल होता है. हिन्दी की कई बोलियों में मां को अम्मा, अम्मां भी बोला जाता है.

दुनियाभर में मां के कितने नाम?

लैटिन में मां को डंजमत कहते हैं. लैटिन वास्तव में रोमन लोगों की भाषा हुआ करती थी और यह संस्कृत के साथ ही साथ ग्रीक भाषा से भी प्रभावित थी. डंजमत शब्द से ही अंग्रेजी में डवजीमत और स्पेनिश में मां के लिए डंकतम शब्द आया है. अंग्रेजी जर्मेनिक भाषा परिवार का हिस्सा है और इसीलिए इस पर मां के लिए जर्मन शब्द डनजजमत का भी प्रभाव दिखता है. पुरानी अंग्रेजी में डवकवत शब्द का इस्तेमाल होता था, जो समय के साथ बदला और आधुनिक अंग्रेजी में डवजीमत के रूप में सामने आया. प्राचीनकालीन ग्रीस में मां के लिए ग्रीक शब्द मीटर का इस्तेमाल होता था पर आधुनिक ग्रीक में मां को मितेरा शब्द से संबोधित किया जाता है. वहीं, जर्मन भाषा वास्तव में इंडो–यूरोपियन भाषा फैमिली की जर्मेनिक शाखा से आती है. इसमें मां के संबा. `धन का शब्द डनजजमत दरअसल संस्कृत के मातृ और लैटिन शब्द डंजमत से प्रभावित है.

सिनो–तिब्बती भाषा परिवार की भाषा मंदारिन (चीनी) में भी मा' का इस्तेमाल होता आया है. मा' शब्द की जड़ें प्राचीनकालीन चीनी भाषा में मिलती हैं. प्राचीन समय में चीनी में मां के लिए डन शब्द का इस्तेमाल किया जाता था. आज भी इसका औपचारिक इस्तेमाल होता है. इसी का रोजमर्रा का रूप डं है.

भारत की भाषाओं में मां को संबोधन के लिए शब्द

तमिल में ताय, अम्मा, तेलुगु में अम्मा, तल्ली, बंगाली में मां, मराठी में आई, पंजाबी में माता, कन्नड़ में अम्मा, मलयालम में अम्मा, ओड़िया में बाउ, माता, असमी में आई, गुजराती में माता, कश्मीरी में मौज, कोंकणी में माई, सिंधी में मऊ, उर्दू में अम्मी, मारवाड़ी में मासा, छत्तीसगढ़ी में दाई, अम्मा, मां, महतारी, उत्तराखंड में माजी, ईजा, बिहार की भोजपुरी और अन्य बोलियों में माई, महतारी, मया, मां, हिन्दी की बोली अवधी में अम्मा आदि शब्दों से मां को पुकारा जाता है.

म ध्वनि यूं ही नहीं है आम

आप देखेंगे कि मां के संबोधन के लिए इस्तेमाल होने वाले ज्यादातर शब्दों में एक ध्वनि आम है और वह है म. यह महज एक संयोग नहीं है. भाषा वैज्ञानिक जॉन मैकवार्टर की एक किताब है, द पावर ऑफ बाबेल रू अ नेचुरल हिस्ट्री ऑफ लैंगुएज. इसमें उन्होंने बताया है कि म ध्वनि का उच्चारण इतना आसान है कि बिना सिखाए ही बच्चे इसे बोलने लगते हैं. इसीलिए अलग–अलग भाषा परिवार जैसे सिनो–तिब्बती, बांटू और सेमेटिक तक इसे एक–दूसरे से प्रभावित हुए बिना ही मां के संबोधन से जोड़ देते हैं. हालांकि, जॉर्जिया एक ऐसा देश है जहां म ध्वनि मां के बजाय पिता के संबोधन में मिलती है. वहां मां को देदा और पिता को मामा कहते हैं.

चीन ने भारतीयों को तिब्बत बुलाया, जानें यह हिन्दुओं के लिए क्यों है खास, क्या है पुराना विवाद

दिनेश पाठक

चीन ने भारतीय श्रद्धालुओं को तिब्बत आने पर लगी रोक हटा दी है या यूं कहें कि फिर से यात्रा की अनुमति दे दी है. चीन के इस फैसले के बाद इस साल कैलाश मानसरोवर की यात्रा श्रद्धालु कर सकेंगे. चीनी विदेश मंत्रालय ने बीते सोमवार इस आशय की घोषणा की. असल में कोविड महामारी के बाद चीन ने कैलाश मानसरोवर यात्रा पर रोक लगा दी थी. साल 2020 में लगी रोक पांच साल बाद अब हटी है. चूंकि, कैलाश मानसरोवर यात्रा पर भारतीयों की संख्या ही ज्यादा होती है, ऐसे में चीन का यह फैसला महत्वपूर्ण हो जाता है. अब वे अपने भोले शंकर के साक्षात दर्शन हेतु जा सकेंगे. कूटनीतिक जानकार इसे चीन–भारत के रिश्तों में गर्माहट के रूप में भी देख रहे हैं. कुछ लोगों का यह भी मानना है कि अमे. रिका से तल्खी के बीच चीन नहीं चाहता कि वह भारत से भी पंगा ले ले बल्कि उसने रिश्तों को आगे बढ़ाने की नीति पर काम शुरू कर दिया है. चीन, तिब्बत को अपना एक स्वायत्त क्षेत्र मानता है जबकि तिब्बत के लोग अपनी संप्रभुता के लिए संघर्ष करते आ रहे हैं. उनके लिए दलाई लामा सर्वोच्च नेता हैं, जो भारत में निर्वासित जीवन जी रहे हैं. अगर रिश्तों में आए इस राजनीतिक–भौगोलिक खटास को अलग कर दें तो यह जानना बेहद रोचक हो जाता है कि बौद्ध धर्म के अनुयायियों की इस धरती तिब्बत में हिन्दू धर्म के लोगों के लिए बहुत कुछ ऐसा है, जिसे हर हिन्दू देखना चाहता है. आंखों में भर लेना चाहता है. स्पर्श मात्र से उसका हृदय गदगद हो जाता है.

कैलाश पर्वत और मान सरोवर झील हिंदुओं की आस्था का केंद्र

कैलाश पर्वत को भगवान शिव का निवास स्थल माना जाता है. हर हिन्दू एक बार जरूर वहां जाकर दर्शन करना चाहता है. यह हिंदुओं की आस्था का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जो तिब्बत में है और यहां बिना चीन की अनुमति के नहीं जाया जा सकता. कैलाश पर्वत के समीप ही स्थित मान सरोवर झील के प्रति भी हिंदुओं की बहुत गहरी आस्था है. मान्यता है कि इस झील में स्नान करने मात्र से कई कष्टों से मुक्ति मिल जाती है. पाप तक धुल जाते हैं.

यहां क्या–क्या है?

ल्हासा और पोताल पैलेस तिब्बती लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है. यहां पहुंचते ही हर श्रद्धालु के सिर झुक जाते हैं. यही तिब्बती धर्म गुरु दलाई लामा का ऐतिहासिक निवास स्थान भी रहा है. चूंकि वे सर्वोच्च धर्म गुरु हैं इसलिए उनके न होने के बावजूद श्रद्धालुओं की निष्ठा किसी भी सूरत में कम नहीं हुई है, बल्कि बढ़ गई है.

ल्हासा में ही मौजूद जोखांग मंदिर एक और बौद्ध आस्था का केंद्र है. सेरा, डेपुंग और गदन मठों में आज भी बौद्ध शिक्षा और प्रार्थना होती आ रही है. कैलाश पर्वत बौद्ध धर्म के लिए भी बहुत पवित्र स्थल है. ये कैलाश को कंग रिंगपोछे कहते हैं. बौद्ध धर्म के अनुयायी कैलाश पर्वत की परिक्रमा को मोक्षदायी मानते हैं.

साझा महत्व की धरती है तिब्बत

हिमालयी क्षेत्र में होने की वजह से तिब्बत एक पवित्र भूमि मानी जाती है. यहां हिन्दू और बौद्ध धर्म, दोनों परंपराओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है. यह बात कैलाश मान सरोवर इलाके में खूब देखने को मिलती है. ध्यान और साधना के लिए इस स्थल को बहुत अनुकूल माना जाता है. दोनों धर्मों के अनुयायी ऐसा मत रखते हैं.

कैलाश मानसरोवर यात्रा

संघर्षपूर्ण है तिब्बत का इतिहास

संसार की छत के रूप में अपनी पहचान रखने वाले तिब्बत पर कभी मंगोलिया और कभी चीन के राजवंशों ने राज किया. फिर इसने हल्की सी सांस ली ही थी कि साल 1950 में चीन ने तिब्बत पर अपना दावा ठोंक दिया. वहां झण्डा लहराने के लिए बड़ी संख्या में सैनिक भेज दिए. कुछ इलाकों को स्वायत्त घोषित कर दिया तो कुछ को चीन के प्रांतों में विलय की घोषणा कर दी. साल 1959 में चीन के खिलाफ हुए एक नाकाम विद्रोह के बाद 14 वें दलाई लामा को भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी. तब से वे यहीं निवास कर रहे हैं. भारत में रहकर वे पूरी दुनिया में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं. दलाई लामा के तिब्बत से बाहर होने के बाद चीन ने कई बौद्ध मठों–मंदिरों को नष्ट भी किया. इस दौरान अनेक जानें भी गईं.

फिलहाल चीन सरकार का शासन

दलाई लामा के जाने के बाद यहां चीन की सरकार है. बिना उनके चाहे पत्ता भी नहीं हिलता. हालांकि, स्वायत्त क्षेत्र के रूप में वहां की स्थानीय सरकार है लेकिन उसका वजूद न के बराबर है. सारे फैसले बीजिंग से ही लिए जाते हैं. यद्यपि, हाल के दिनों में बौद्ध मठों और मंदिरों के खिलाफ किसी तरह के अत्याचार की खबर नहीं है.

धोलिया जट्टा में वर्षों से बंद पड़ा प्राइमरी स्कूल, ग्रामीणों ने शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर उठाए गंभीर सवाल

धोलिया जट्टा मे बंद पड़ा प्राइमरी स्कूल | स्थानीय लोग जानकारी देते | जानकारी देते मढ़ीन ज़ोनल शिक्षा अधिकारी

राज कुमार/सनी शर्मा

धोलिया जट्टा/मढ़ीन : जहां एक ओर सरकार हर बच्चे को शिक्षा से जोड़ने के लिए योजनाएं चला रही है, वहीं कठुआ जिले की तहसील मढ़ीन के अंतर्गत आने वाले गांव धोलिया जट्टा में स्थित सरकारी प्राइमरी स्कूल कई वर्षों से बंद पड़ा है। इससे स्थानीय लोगों में भारी नाराजगी है और उन्होंने शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवाल खड़े किए हैं।

गांव धोलिया जट्टा में लगभग 500 से 600 घर हैं, इसके बावजूद वहां के बच्चों को शिक्षा के लिए 2 किलोमीटर दूर स्थित स्कूलों में जाना पड़ता है। ग्रामीणों का कहना है कि इतनी बड़ी आबादी के बावजूद यदि गांव में एक भी कार्यरत प्राथमिक विद्यालय न हो, तो यह सरकार की शिक्षा नीति और शिक्षा विभाग की संवेदनहीनता को दर्शाता है।

स्थानीय निवासी बलकार सिंह और मखन सिंह ने बताया कि पहले स्कूल में 10 से 15 बच्चे पढ़ते थे और धीरे–धीरे संख्या में बढ़ोतरी भी हुई थी, लेकिन फिर भी स्कूल को बंद कर दिया गया। उन्होंने कहा, "किसी ठोस कारण के बिना स्कूल को बंद कर दिया गया और आज तक हमें यह नहीं बताया गया कि ऐसा क्यों हुआ।"

बलकार सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा, "अगर समय रहते हमारे बच्चों को शिक्षा नहीं मिली, तो वे नशे और गलत रास्तों की ओर चले जाएंगे। सरकार बार–बार शिक्षा को प्राथमिकता देने की बात करती है, लेकिन जमीनी हकीकत इसके ठीक उलट है।"

उन्होंने प्रशासन की कार्यशैली पर भी सवाल उठाते हुए कहा, "अधिकारी सिर्फ दफ्तरों में बैठकर योजनाएं बनाते हैं, लेकिन जमीनी सच्चाई से पूरी तरह अनजान हैं। कोई भी अधिकारी खुद मौके पर आकर यह नहीं देखता कि गांव में क्या हालात हैं।"

इस संबंध में जब जोनल शिक्षा अधिकारी मढ़ीन, अशोक कुमार से बात की गई तो उन्होंने बताया कि, "धोलिया जट्टा का स्कूल कम नामांकन के कारण बंद किया गया था और इसे गवर्नमेंट गर्ल्स प्राइमरी स्कूल में मर्ज कर दिया गया है, ताकि बच्चों की शिक्षा बाधित न हो।"

हालांकि, ग्रामीणों की मांग है कि गांव में पुनः स्कूल खोला जाए और नियमित शिक्षकों की तैनाती की जाए ताकि बच्चों को अपने ही गांव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके।

ग्रामीणों का स्पष्ट कहना है कि सरकार यदि सच में शिक्षा को लेकर गंभीर है, तो उसे केवल नीतियां बनाने से आगे बढ़कर, गांव की जमीनी जरूरतों को समझना होगा और शिक्षा के बुनियादी ढांचे को फिर से सशक्त करना होगा।

मिनरवा पब्लिक स्कूल कठुआ कि बस खाई में गिरी, बड़ा हादसा टला; ट्रैफिक विभाग की लापरवाही आई सामने

घाटी क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त स्कूल वैन, जिसे स्थानीय लोगों ने समय रहते खाई से बाहर निकाला। हादसे में बाल–बाल बचे स्कूली छात्र।

सबका जम्मू कश्मीर

घाटी/कठुआ : जम्मू–कश्मीर के कठुआ जिले के घाटी क्षेत्र में शुक्रवार सुबह एक बड़ा हादसा होते–होते टल गया, जब मिनरवा पब्लिक स्कूल कठुआ स्कूल की वैन अनियंत्रित होकर सड़क से फिसलती हुई गहरी खाई में जा गिरी। राहत की बात यह रही कि वैन पेड़ों में अटक गई, जिससे उसमें सवार सभी बच्चों की जान बच गई।

स्थानीय लोगों ने दिखाई तत्परता

घटना की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और बिना देरी किए राहत कार्य शुरू किया। बच्चों को सावधानीपूर्वक वाहन से बाहर निकाला गया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार किसी भी बच्चे को गंभीर चोट नहीं आई है, हालांकि सभी को एहतियातन चिकित्सा जांच के लिए नजदीकी अस्पताल भेजा गया।

ट्रैफिक विभाग की कार्यशैली पर उठे सवाल

इस घटना ने कठुआ जिले में ट्रैफिक विभाग की लापरवाही को एक बार फिर उजागर कर दिया है। स्थानीय नागरिकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि ट्रैफिक पुलिस की भूमिका केवल चालान काटने तक सीमित रह गई है। स्कूल वाहनों की नियमित जांच, ड्राइवर की योग्यता और फिटनेस सर्टिफिकेट की जांच ना के बराबर की जाती है।

स्कूल वैन की खस्ताहालत बनी खतरा

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बताया कि कई निजी स्कूलों द्वारा इस्तेमाल की जा रही वैनें न तो फिटनेस मानकों पर खरी उतरती हैं और न ही सुरक्षा उपकरणों से लैस होती हैं। कई वैनें ऐसी हैं जिन्हें आम लोग निजी तौर पर चलाते हैं और उनमें न तो कोई ट्रेंड ड्राइवर होता है और न ही सुरक्षा नियमों का पालन किया जाता है। कई मामलों में ड्राइवर की जगह कंडक्टर ही बच्चों को लेकर स्कूल पहुंचाते हैं।

प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग

घटना के बाद सामाजिक कार्यकर्ताओं और अभिभावकों में रोष देखा गया। उन्होंने कठुआ जिला प्रशासन से मांग की कि स्कूल वाहनों की नियमित जांच अनिवार्य की जाए और ट्रैफिक विभाग की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए।

एक सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा, ष्यह बच्चों की जिंदगियों के साथ खिलवाड़ है। अगर आज वैन पेड़ों में न अटकती तो एक बड़ा हादसा हो सकता था। प्रशासन को तुरंत हस्तक्षेप कर ऐसे वाहनों पर सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

हीरानगर में मिशन युवा की योजनाओं पर एसडीएम ने कसी नकेल, अधिकारियों को दिए सख्त निर्देश

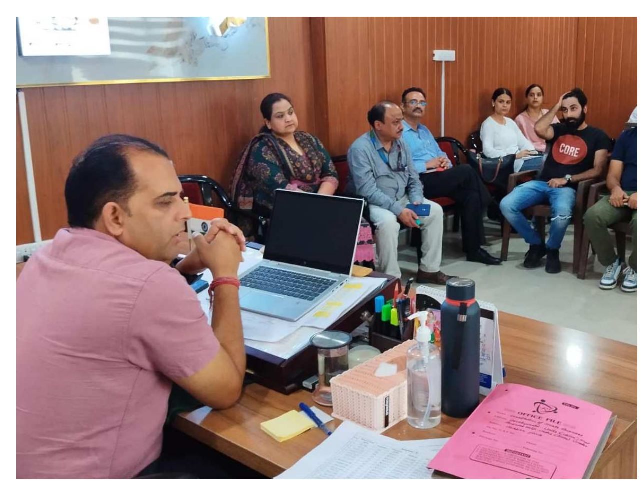

सबका जम्मू कश्मीर

हीरानगर, : उपमंडल हीरानगर में मिशन युवा के तहत चलाई जा रही योजनाओं की समीक्षा को लेकर एसडीएम फुलैल सिंह (श्रज्ञ्) ने एक अहम बैठक ली। बैठक में उपमंडल हेल्प डेस्क के सदस्य, हीरानगर, मढ़ीन, डिंगा अंब व बरनोटि ब्लॉक के युवा दूतों ने हिस्सा लिया।

बैठक के दौरान पंचायत स्तर से भेजे गए मामलों की बारीकी से जांच की गई। एसडीएम ने युवा दूतों को सख्त निर्देश दिए कि वह गांव–गांव जाकर योजना की जानकारी युवाओं तक पहुंचाएं ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति लाभ से वंचित न रहे।

बैठक में छत्स्ड के बीपीएम को भी निर्देशित किया गया कि स्वयं सहायता समूहों (भ्ळे) को सक्रिय किया जाए और उन्हें रोजगार सृजन व सरकारी योजनाओं से जोड़ने के प्रयास तेज किए जाएं।

बैंकों को चेताया गया कि लंबित मामलों को प्राथमिकता पर निपटाएं।

वहीं, कुछ मामलों में परियोजना की जरूरतों के अनुसार लागत में संशोधन किए जाने की बात भी सामने आई।

एसडीएम फुलैल सिंह ने दो टूक कहा कि "सरकारी योजनाएं काग. जों तक ही सीमित न रहें, जमीनी हकीकत में भी उनका असर दिखना चाहिए। युवा दूत और संबंधित विभाग इस दिशा में पूरी जिम्मेदारी से काम करें, लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।"

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

किसने बनवाया ओडिशा के जगन्नाथ धाम का मंदिर, फिर से चर्चा में क्यों? जानें पूरा इतिहास

भगवान जगन्नाथ के इस मंदिर को कलिंग शैली में बनाया गया है. मुख्य मंदिर का आकार वास्तव में वर्करेखीय है. इसके शिखर पर भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र बनाया गया है. इसकी विशेषता यह है कि शहर के किसी भी कोने से देखें तो सुदर्शन चक्र बीच में ही दिखता है. अष्टधातु से निर्मित इस चक्र को नीलचक्र भी कहा जाता है.

दिनेश पाठक

पश्चिम बंगाल में समुद्र किनारे स्थित दीघा में भगवान विष्णु का एक मंदिर बनवाया गया है. 30 अप्रैल को इसका उद्घाटन किया गया और मंदिर को जगन्नाथ धाम नाम दिया गया. इसपर ओडिशा सरकार के साथ ही पुजारियों ने भी आपत्ति जताई है. यहां तक कि दीघा के मंदिर के उद्घाटन में मौजूद रहे मुख्य पुजारी रामकृष्णदास महापात्र ने भी नए मंदिर के नाम जगन्नाथ धाम को हटाने की मांग की है. ऐसा इसलिए क्योंकि जगन्नाथ धाम के रूप में केवल ओडिशा के पुरी में स्थित जगन्नाथ मंदिर को ही मान्यता मिली है. आइए जान लेते हैं कि जगन्नाथ धाम का मंदिर किसने बनवाया था? यह मंदिर कब–कब चर्चा में रहा?

इसलिए जगन्नाथ धाम नाम पर है आपत्ति

हिन्दू धर्म में मान्यता है कि भगवान विष्णु के चार धाम हैं. उत्तराखंड में बद्रीनाथ, गुजरात में द्वारिका, दक्षिण में रामेश्वरम और ओडिशा में जगन्नाथ पुरी. भगवान जब अपने चारों धामों की यात्रा पर निकलते हैं तो हिमालय की चोटी पर बने बद्रीनाथ धाम में स्नान करते हैं. फिर पश्चिम में स्थित द्वारिका में वस्त्र पहनते हैं. ओडिशा के पुरी में भोजन करते हैं और रामेश्वरम में विश्राम करते हैं. द्वापर के बाद कृष्ण पुरी में निवास के साथ भगवान जग के नाथ यानी जगन्नाथ कहलाए. इसीलिए पुरी के जगन्नाथ धाम में वह बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ विराजमान हैं. इसीलिए इन चार धामों के अलावा भगवान विष्णु के किसी अन्य मंदिर को धाम की मान्यता नहीं दी जाती है.

स्कंदपुराण में भी मिलता है वर्णन

आज का उड़ीसा प्राचीन काल में उत्कल नाम से जाना जाता था. यहां स्थित पुरी हिन्दुओं की प्राचीन और पवित्र सात नगरियों में से एक है. बंगाल की खाड़ी के पूर्वी छोर पर बसी ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर से कुछ ही दूरी पर स्थित पुरी ओडिशा के समुद्री तट पर बसी है. पुराणों में इसे बैकुंठ कहा गया है. पुरी धाम का भौगोलिक वर्णन स्कंद पुराण में भी मिलता है. इसके अनुसार पुरी वास्तव में एक दक्षिणवर्ती शंख जैसी है. यह 16 किमी क्षेत्र में फैली है.

महाभारत में भी मिलता है जगन्नाथ धाम का वर्णन पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर का पहला प्रमाण महाभारत के वनपर्व में पाया जाता है. बताया जाता है कि इसका निर्माण मालवा के राजा इंद्रद्युम्न ने कराया था. इंद्रद्युम्न के पिता का नाम भारत और मां का नाम सुमति था. मान्यता है कि एक बार राजा इंद्रद्युम्न के सपने में भगवान जगन्नाथ के दर्शन हुए. उन्होंने कहा कि नीलांचल पर्वत स्थित एक गुफा में मेरी (भगवान जगन्नाथ) एक मूर्ति है. नीलमाधव नाम से उसकी पूजा की जाती है. एक मंदिर बनवाकर यह मूर्ति उसमें स्थापित कर दो. राजा के ब्राह्मण सेवक विद्यापति को पता था कि सबर कबीले के लोग नीलमाधव की आराधना करते हैं. इसलिए उसने कबीले के मुखिया विश्ववसु की बेटी से विवाह कर लिया और उसके माध्यम से गुफा में जाकर मूर्ति चुराकर राजा इंद्रद्युम्न को लाकर दे दी. मूर्तियां चोरी कराईं, फिर लकड़ी की बनवाईं विश्ववसु अपने आराध्य की मूर्ति चोरी होने से दुखी हो गया तो भगवान भी दुखी हो गए और विश्ववसु के पास लौट गए. इस पर राजा भी दुखी हो गए और भगवान से लौटने की प्रार्थना की तो उन्होंने कहा कि एक विशाल मंदिर बनवाओ, मैं लौट आऊंगा. मंदिर बनने के बाद भगवान ने सपने में राजा से समुद्र में तैर रही नीम की एक लकड़ी निकलवा कर मूर्ति बनवाने के लिए कहा. उसे निक. ालने की राजा की सारी कोशिशें नाकाम होने पर विश्ववसु को बुलाया गया, जो अकेले ही लकड़ी निकाल लाया.

फिर उस लकड़ी से मूर्ति बनाने के प्रयास भी नाकाम हो गए तो भगवान विश्वकर्मा बुजुर्ग का रूप धर कर आए और मूर्तियां बनानी शुरू कीं. हालांकि, शर्त के अनुसार उस स्थान पर किसी को नहीं जाना था, जहां वह मूर्तियां बना रहे थे पर परिस्थितिवश राजा को वहां का दरवाजा खुलवाना पड़ा. ऐसे में भगवान विश्वकर्मा अंतर्ध्यान हो गए और मूर्तियां अधूरी रह गईं. उन्हीं अधूरी मूर्तियों को राजा इंद्रद्युम्न ने स्थापित कराया था. इस तरह से 12वीं शताब्दी में मंदिर का निर्माण हुआ.

कलिंग के राजा ने कराया था वर्तमान जगन्नाथ मंदिर का निर्माण

इसके बाद जगन्नाथ मंदिर का पुनर्निर्माण 10वीं और 15वीं शताब्दी के बाद भी कराया गया था. मंदिर परिसर को बाद के राजाओं की ओर से भी विकसित कराया गया. गंग वंश के ताम्र पत्रों में वर्णन मिलता है कि पुरी में वर्तमान जगन्नाथ मंदिर का निर्माण कलिंग के राजा अनंतवर्मन चोडगंग देव द्वारा शुरू कराया गया था. मंदिर के जगमोहन और विमान भाग को इन्हीं के शासन काल में 1078–1148 के दौरान बनाया गया था. ओडिशा के राजा अनंग भीम ने 1174 ईस्वी में जगन्नाथ धाम मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया था. जगन्नाथ धाम के मुख्य मंदिर के अगल–बगल करीब 30 छोटे मंदिर स्थापित हैं.

ऐसा है जगन्नाथ धाम मंदिर

भगवान जगन्नाथ के इस मंदिर को कलिंग शैली में बनाया गया है. मुख्य मंदिर का आकार वास्तव में वर्करेखीय है. इसके शिखर पर भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र बनाया गया है. इसकी विशेषता यह है कि शहर के किसी भी कोने से देखें तो सुदर्शन चक्र बीच में ही दिखता है. अष्टधातु से निर्मित इस चक्र को नीलचक्र भी कहा जाता है. यह मंदिर करीब 214 फुट ऊंचे पत्थर के चबूतरे पर बना है. इसके गर्भगृह में मुख्य देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं. मंदिर का मुख्य भवन 20 फीट ऊंची दीवार से घिरा है. यहां के महाप्रसाद में 56 प्रकार के भोग तैयार किए जाते हैं.

रथ यात्रा के साथ ही रत्न भंडार के कारण होती है चर्चा

पुरी का जगन्नाथ मंदिर हर साल रथ यात्रा के लिए चर्चा में रहता है. हालांकि, यह अपने रत्न भंडार को लेकर भी चर्चा में रहता आया है. इस रत्न भंडार को साल 1905, 1926 और फिर 1978 में खोला गया था. तब वहां रखी बेशकीमती चीजों की सूची बनाई गई थी. इसके बाद इस भंडार को 14 जुलाई 1985 को खोलकर मरम्मत की गई थी. फिर सरकार ने मंदिर की भौतिक संरचना की जांच कराने का फैसला किया तो चार अप्रैल 2018 को खुलासा हुआ कि रत्न भंडार की चाबियां ही खो गई हैं. यहां तक कि पिछले साल (मई 2024) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी ओडिशा में लोकसभा और विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान रत्न भंडार का जिक्र किया था और कहा था कि जगन्नाथ मंदिर सुरक्षित नहीं है.

दुनिया में कितने लोग भूखे पेट सो रहे, कितना फेंका जा रहा खाना? आंकड़ों के समझें पूरी कहानी

नई दिल्ली

ग्लोबल हंगर इंडेक्स की 125 देशों की लिस्ट में भारत को 111वें पायदान पर रखा गया है. जो साफतौर पर दिखाता है कि देश में अभी भी हर किसी को पर्याप्त पोषण से भरपूर भोजन नहीं मिल रहा है. ऐसे में देखा जाए तो देश में खाने की बर्बादी किसी अपराध से कम नहीं है. दुनियाभर में 33 फीसदी खाना हर साल बर्बाद हो जाता है. इसको लेकर जागरुकता फैलाने के लिए हर साल स्टॉप फूड वेस्ट डे मनाया जाता है. जानिए, दुनिया में कितने लोग भूखे पेट सो जाते हैं, देश में कितने कुपोषित हैं और कौन सा देश सबसे ज्यादा खाना बर्बाद कर रहा है?

क्यों मनाते हैं स्टॉप फूड वेस्ट डे?

स्टॉप फूड वेस्ट डे कंपास ग्रुप यूएसए द्वारा 2017 में स्थापित एक ग्लोबल इवेंट के साथ–साथ पहल बन चुका है. इसके ज़रिए खाने की बर्बादी से बचने के लिए लोगों को जागरूक करने के साथ उन्हें इसके लिए शिक्षित करने की कोशिश की जाती है. इस खास दिन को अप्रैल के आखिरी बुधवार को मनाया जाता है. 30 अप्रैल यानी आज मनाए जा रहे स्टॉप फूड वेस्ट डे को वैश्विक आंदोलन के रूप में सेलिब्रेट किया जा रहा है, जिसे कई देशों में मान्यता प्राप्त है. लोगों का मानना है कि आपसी सहयोग और प्रयासों की मदद से भोजन की हो रही इस बर्बादी को आधा किया जा सकता है.

देश में कितने लोग कुपोषित?

देश में 100 करोड़ से ज्यादा लोगों को पोषण से भरपूर आहार मिल ही नहीं पा रहा है. इसके बावजूद खाद्य पदार्थों की यह बर्बादी बड़ी समस्या बन गई है. देश में भोजन की कमी और कुपोषण की समस्या कितनी गंभीर है इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत में 23.4 करोड़ लोग कुपोषण का शिकार हैं.वर्तमान में दुनिया भर में बर्बाद होने वाले भोजन के मात्र एक चौथाई भाग से 795 मिलियन कुपोषित लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है.

कितने लोग भूखे सोने को मजबूर?

संयुक्त राष्ट्र फूड वेस्ट इंडेक्स रिपोर्ट 2024 कहती है, हर साल सालाना कुल खाद्य उत्पादन का 19: बर्बाद हो रहा है, जो करीब 105.2 करोड़ टन के बराबर है. दुनिया में 78.3 करोड़ लोग खाली पेट सोने को मजबूर हैं. दुनिया का हर व्यक्ति सालाना करीब 79 किलोग्राम भोजन बर्बाद कर रहा है, जो दुनिया में प्रतिदिन 100 करोड़ थालियों जितने आहार के बर्बाद होने के बराबर है.

कौन सा देश कितना करता है फूड वेस्ट?

कई अफ्रीकी देश भुखमरी का सामना कर रहे हैं, वहीं, नाइजीरिया जैसे देश भी हैं जहां हर व्यक्ति साल में करीब 113 किलोग्राम भोजन बर्बाद कर देता है. मिस्र में हर व्यक्ति औसतन 163 किलोग्राम भोजन बर्बाद कर रहा है. तंजानिया में यह आंकड़ा 152 किलो और रवांडा में 141 किलो दर्ज किया गया है. प्रति व्यक्ति फूड वेस्ट के मामले में मालदीव अव्वल है, जहां प्रति व्यक्ति सालाना 207 किलोग्राम फूड वेस्ट हो रहा है. सीरिया और ट्यूनीशिया में यह आंकड़ा 172 किलो और पाकिस्तान में 130 किलो दर्ज किया गया है. वहीं, रूस में यह आंकड़ा 33 किलो और फिलिपींस में 26 किलो दर्ज है.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

संपादकीय

भारत की भाषाई शक्ति

पश्चिम के अधिकांश हिस्सों में, द्विभाषिकता को अक्सर एक संज्ञानात्मक बढ़त के रूप में देखा जाता है ् एक अर्जित कौशल जो वृद्ध मस्तिष्क को तेज करता है या युवा मन को समृद्ध बनाता है। भारत में, यह जन्मसिद्ध अधिकार है। अधिकांश भारतीय प्रतिदिन अपनी मातृभाषा, राज्य भाषा, हिंदी और अंग्रेजी के बीच स्विच करते हैं, अक्सर अनजाने में। फिर भी, जबकि यूरोप और उत्तरी अमेरिका में अध्ययन इस बात पर बहस करते हैं कि क्या कई भाषाएँ बोलने से संज्ञानात्मक गिरावट से सुरक्षा मिलती है, भारत चुपचाप बहुभाषी जीवन में एक विशाल, अनियंत्रित प्रयोग का प्रतीक है। विज्ञान अनिश्चित हो सकता है, लेकिन जीवित अनुभव पहले से ही बहुत शिक्षाप्रद है। पहले के अध्ययनों ने सुझाव दिया था कि द्विभाषिकता ष्कार्यकारी कार्यष को बढ़ाती है ् योजना और निर्णय लेने के पीछे की मानसिक मांसपेशी ् और मनोभ्रंश की शुरुआत में देरी कर सकती है। हालाँकि, हाल के शोध सतर्क रहे हैं। कुछ निष्कर्ष दोहराने में विफल रहे हैं। अन्य बताते हैं कि लाभ सबसे स्पष्ट रूप से उन लोगों को मिलते हैं जो धाराप्रवाह हैं और अक्सर भाषाओं के बीच स्विच करते हैं। यह केवल दूसरी भाषा का ज्ञान नहीं है जो मायने रखता है ् यह भाषाओं के बीच टॉगल करने में मानसिक लचीलापन है। यह सहज ज्ञान युक्त समझ में आता है। एक डेन का दैनिक जीवन में डेनिश और अंग्रेजी के बीच स्विच करना, या एक कनाडाई का अंग्रेजी और फ्रेंच के बीच टॉगल करना, मस्तिष्क को एक विशेष प्रकार के संज्ञानात्मक नियंत्रण में प्रशिक्षित करता है। लेकिन एक भारतीय भी घर पर तमिल, काम पर अंग्रेजी और सामाजिक परिस्थितियों में हिंदी या तेलुगु के बीच स्विच करता है। तंत्र समान हैं, भले ही भाषाएं भिन्न हों। फिर भी द्विभाषिकता पर अधिकांश तंत्रिका विज्ञान पश्चिमी भाषाई पदानुक्रमों द्वारा आकार दिया गया है ् उन देशों की अनदेखी जहाँ बहुभाषिकता आदर्श है, अपवाद नहीं। भारत में, भाषाई चपलता अक्सर बचपन में ही शुरू हो जाती है ् शिक्षण से नहीं बल्कि आवश्यकता से। बेंगलुरु में एक बच्चा घर पर कन्नड़, पड़ोसियों के साथ हिंदी और स्कूल में अंग्रेजी बोल सकता है। यह अचेतन कोड–स्विचिंग, जो प्रतिदिन दोहराई जाती है, संज्ञानात्मक क्रॉस–ट्रेनिंग के रूप में अच्छी तरह से काम कर सकती है। नियंत्रित परिस्थितियों में अध्ययन नहीं किए जाने पर भी, ऐसी तरलता अधिक भाषाई रूप से समरूप समाजों में जानबूझकर द्विभाषी प्रशिक्षण की तुलना में तुलनीय, यदि अधिक समृद्ध नहीं, तो लाभ प्रदान कर सकती है। यह एक चूका हुआ अवसर है। भारत, नाइजीरिया, दक्षिण अफ्रीका और कई अन्य देश उच्च–कार्यशील बहुभाषी आबादी के वास्तविक दुनिया के मॉडल प्रस्तुत करते हैं। उनका समावेश इस बात की हमारी समझ को गहरा कर सकता है कि भाषा विभिन्न संस्कृतियों और संदर्भों में संज्ञान के साथ कैसे अंतःक्रिया करती है। यदि प्रवाह और बार–बार भाषा बदलना ही कुंजी है, तो लाखों भारतीय, न कि केवल पश्चिम के कुलीन बहुभाषी, स्वाभाविक रूप से रुचि के विषय हैं। फिर भी, संज्ञानात्मक लाभों पर बहस से द्विभाषिकता के अन्य, अधिक आधारभूत मूल्यों को अस्पष्ट नहीं किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि दूसरी भाषा सीखने से भी – चाहे वह स्पेनिश हो, मराठी हो, या मंदारिन हो – सहानुभूति बढ़ सकती है, सामाजिक द्वार खुल सकते हैं, और विशुद्ध नवीनता के माध्यम से मानसिक ठहराव में देरी हो सकती है। भाषा केवल दिमागी कसरत नहीं है; यह एक सेतु है। एक वृद्ध होती दुनिया में, ये सेतु पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए जब शोधकर्ता अपने मॉडलों को परिष्कृत करते हैं और सांख्यिकीय महत्व पर बहस करते हैं, तब हममें से बाकी लोग बोलते रह सकते हैं, भाषा बदल सकते हैं और सीख सकते हैं। चाहे हम लंदन, लागोस या लखनऊ में बुढ़ापे का सामना कर रहे हों, एक से अधिक भाषाओं में सोचने की क्षमता सबसे मानवीय ् और संभवतः सबसे स्वस्थ ् चीजों में से एक है जो हम कर सकते हैं।

निरंकुश अभिव्यक्ति से जुड़े सुप्रीम फैसलों का स्वागत हो

ताजा मामलों में कई राज्यों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नियमन को लेकर सरकारी कार्रवाई को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। कई जगह विचारों की अभिव्यक्ति व कार्टून आदि बनाने को राजनीतिक दुराग्रह बताते हुए लोगों को

yfyr xx

सुप्रीम कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी एवं सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एंटी सोशल अभिव्यक्ति की सुनवाई करते हुए समय–समय पर जो कहा, वह जहां संवैधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिहाज से खासा अहम है वहीं एक संतु. लित एवं आदर्श राष्ट्र एवं समाज व्यवस्था का आधार भी है। सोशल मीडिया मंचों पर एंटी सोशल अभिव्यक्ति के चलते उपजी विभाजनकारी एवं विध्वंसकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश की जरूरत बताते हुए देश की शीर्ष अदालत ने आत्म–नियमन, वाणी संयम एवं विचार संयम की जरूरत बतायी है। धर्म विशेष के देवी–देवताओं के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट के चलते कई राज्यों में प्राथमिकी दर्ज हुई एवं यह याचिका दायर की गई। दरअसल, जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस के. वी. विश्वनाथन की पीठ ने एक व्यक्ति द्वारा दायर इसी याचिका पर विचार करते हुए कहा कि समाज में विद्वेष, घृणा व नफरत फैलाने वाले संदेश समरसता, सौहार्द एवं सद्भावना के भारतीय परिवेश के लिये गंभीर चुनौती बने हुए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी से जुड़ी इन जटिल होती स्थितियों को गंभीरता से लिया और अनेक धुंधलकों को साफ किया है। अदालत का कहना था कि नागरिकों को अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही इस अधिकार का इस्तेमाल करते हुए आत्म–संयम बरतना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी व धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने से जुड़े अनेक मामलों के साथ–साथ ताजा मामले में जो फैसले किए हैं और इस दौरान जो टिप्पणियां की हैं, उसके निहितार्थों को समझते हुए इन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के जुड़े फैसलों रूपी उजालों का स्वागत होना ही चाहिए।

आज सोशल मीडिया जैसे मंचों के बेजा इस्तेमाल की प्रवृति बढ़ रही है, फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब जैसे सोशल मंचों एवं टीवी चौनलों पर ऐसी सामग्री परोसी एवं प्रस्तुत की जा रही है, जो अशिष्ट, अभद्र, हिंसक, भ्रामक, राष्ट्र–विरोधी एवं समुदाय विशेष के लोगों को आहत करने वाली होती है, जिसका उद्देश्य राष्ट्र को जोड़ना नहीं, तोड़ना है। इन सोशल मंचों पर ऐसे लोग सक्रिय हैं, जो तोड़–फोड़ की नीति में विश्वास करते हैं, वे चरित्र–हनन और गाली–गलौच जैसी औछी हरकतें करने के लिये उद्यत रहते हैं तथा उच्छृंखल एवं विध्वंसात्मक नीति अपनाते हुए अराजक माहौल बनाते हैं।

एक प्रगतिशील, सभ्य एवं शालीन समाज में इस तरह की हिंसा, अश्लीलता, नफरत और भ्रामक सूचनाओं की कोई जगह नहीं होनी चाहिए, लेकिन विडम्बना है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कानून के चलते सरकार इन अराजक स्थितियों पर काबू नहीं कर पा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने चेताया है कि यदि सोशल मीडिया पर विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर अंकुश नहीं लगता तो सरकार को हस्तक्षेप करने का मौका मिलता है, जो एक अच्छी स्थिति नहीं होगी। आज सोशल मीडिया, समाचार चौनलों और राजनीतिक मंचों पर जिस प्रकार की उग्र भाषा, झूठे आरोप, धार्मिक विद्वेष और भावनात्मक उकसावे देखे जा रहे हैं, वे न केवल समाज को विभाजित कर रहे हैं, बल्कि लोकतांत्रिक संवाद की गरिमा को भी ठेस पहुँचा रहे हैं। यही वजह है कि कोर्ट को कहना पड़ा कि वह नियमन के लिये दिशा–निर्देश जारी करने पर विचार कर रही है। दरअसल, अदालत का मानना था कि भारत के संविधान का अनुच्छेद 19(1)(ए) नागरिकों को 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' देता है, इसके तहत प्रत्येक नागरिक को विचार, वाणी, लेखन, चित्रण आदि के माध्यम से स्वतंत्र रूप से अपनी बात कहने का अधिकार है। लेकिन आज इस अधिकार के दुरुपयोग की घटनाएं जिस प्रकार सामने आ रही हैं, वह चिंता का विषय बन चुकी हैं। इसलिए आज जरूरत है विचार संयम और वाणी संयम की। इसीलिये अनुच्छेद 19(2) इसके कुछ 'उचित प्रतिबंध' भी निर्धारित करता है जैसे भारत की संप्रभुता और अखंडता, देश की सुरक्षा, राज्य की अखंडता, लोक व्यवस्था, शालीनता या नैतिकता, अश्लील या अनैतिक भाषण, अदालत की अवमानना, मानहानि, अपराध के लिए उकसावा एवं अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों से जुड़ी अराजकता पर प्रतिबंध, इन प्रतिबंधों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि स्वतंत्रता का उपयोग अनुशासन और राष्ट्रीय हितों की मर्यादा में हो। संविधान के अनुच्छेद 19(2) के तहत मिली आजादी असीमित कदापि नहीं है।

ताजा मामलों में कई राज्यों में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के नियमन को लेकर सरकारी कार्रवाई को लेकर भी सवाल उठते रहे हैं। कई जगह विचारों की अभिव्यक्ति व कार्टून आदि बनाने को राजनीतिक दुराग्रह बताते हुए लोगों को गिरफ्तार तक किया गया है। जिसे राजनीतिक दलों द्वारा बदले की भावना से की कार्रवाई बताया जाता रहा है।

आरोप लगाया जाता रहा है कि सत्तारूढ़ दल की विचारधारा के अनुरूप अमर्यादित एवं अशालीन अभिव्यक्ति के बावजूद कोई एक्शन नहीं लिया जाता। लेकिन दूसरे राज्य में अन्य राजनीतिक दल की सरकार में यही अभिव्यक्ति अपराध बन जाती है। कोई नहीं चाहता कि आम नागरिक की अभिव्यक्ति की आजादी को सरकार नियंत्रित करे। सही मायनों में लोगों को समझना चाहिए कि देश की एकता व अखंडता बनाये रखना मौलिक कर्तव्य ही है। अदालत ने इस बाबत सवाल भी किया कि नागरिक स्वयं को संयमित क्यों नहीं कर सकते? राजनीतिक दल, धार्मिक नेता या उग्रवादी कार्यकर्ता क्यों समाज में विषवमन करते हुए विवादास्पद एवं वर्ग–धर्म विशेष के लोगों की भावनाओं को आहत करने वाले कटू एवं कड़वे बयान देते हैं? कोर्ट का मानना था कि लोग तभी अभिव्यक्ति की आजादी का आनन्द ले सकते हैं जब यह संयमित ढंग से व्यक्त की जाए।

शीर्ष अदालत की पीठ का मानना था कि नागरिकों के बीच भाईचारा होना चाहिए, तभी समाज में नफरत से मुकाबला किया जा सकता है। तभी हम गंगा–जमुनी सांझा संस्कृति के राष्ट्र एवं समाज का निर्माण कर सकते हैं।

आज के दौर में हमें विचार संयम और वाणी संयम को अपनी संस्कृति और लो. कतंत्र की आधारशिला बनाना होगा। जैसाकि स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "बोलने से पहले तीन बार सोचो, क्या यह सत्य है? क्या यह आवश्यक है? क्या यह दूसरों को आहत तो नहीं करेगा?" संविधान हमें अधिकार देता है, लेकिन उसके साथ आत्मानुशासन और समाजहित की अपेक्षा भी करता है। यदि हम इसे समझ लें, तो हमारा लोकतंत्र और अधिक सशक्त और समरस बन सकता है। अभिव्यक्ति की आजादी लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन जब यह सीमा पार करती है तो देश की एकता, अखंडता और सामाजिक समरसता को खतरा उत्पन्न होता है। सुप्रीम कोर्ट बार–बार यह संदेश दे रहा है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी और मर्यादा जुड़ी है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम का भी मानना था कि "यदि आपके शब्द राष्ट्र को प्रेरित करने की बजाय भटकाने लगे, तो वह आजादी नहीं, अराजकता है।"

सोशल मीडिया आज एक ऐसा ही अस्त्र बन गया है जो जरा सी चूक से घातक साबित हो सकता है। वास्तव में हर नागरिक को इतना सचेत व जागरूक होना जरूरी है कि वह विभिन्न स्रोतों से आने वाली सामग्री से जुड़ी मंशा को समझ सके। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा था कि "लोकतंत्र में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन मर्यादा टूटे तो वह विरोध नहीं, विघटनकारी गतिविधि बन जाती है।" ऐसी ही विघटनकारी गतिविधियां सोशल मीडिया पर विनाशकारी स्वरूप लेती जा रही है। यह निर्विवाद सत्य है कि विभिन्न राजनी. तिक दलों व संगठनों द्वारा सोशल मीडिया मंच का जमकर दुरुपयोग किया जाता रहा है। वहीं लोगों का कसूर यह है कि दल विशेष के एजेंडे वाली सामग्री को वे बिना पढ़े, दूसरे लोगों व समूहों में शेयर कर देते हैं।

दरअसल, आम नागरिकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि सोशल मीडिया पर उनका संयमित व्यवहार कैसा होना चाहिए? बहुत से लोगों को यह पता नहीं होता है कि सोशल मीडिया पर शेयर की जा रही सामग्री की कितनी संवेदनशीलता है?

कई लोग जाने–अनजाने में ऐसी सामग्री दूसरे व्यक्तियों व समूहों में शेयर कर देते हैं जो राष्ट्र एवं समाज विरोधी हो सकती है। दरअसल, वे उसकी मूल सामग्री को बनाने वाले के छिपे एजेंडे को नहीं भांप पाते। कभी–कभी भावावेश में लोग ऐसे कदम उठा देते हैं। जाहिर है, उच्छृंखल हुए बिना आजादी के उपयोग में ही नागरिक का भी भला है और समाज का भी।

– ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार
(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

जब घायल मेजर होशियार सिंह ने थामी मशीनगन, मारे गए 89 पाकिस्तानी सैनिक, पढ़ें भारत-पाक जंग के दिलचस्प किस्से

साल 1971 में हुए बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में मेजर होशियर सिंह ने बसंतर में मोर्चा संभाला. घायल अवस्था में ही उन्होंने मशीनगन थाम ली. इससे कम्पनी के दूसरे सैनिकों का जोश और भी बढ़ गया. वे दुश्मनों पर टूट पड़े. उस दिन लड़ाई में पाकिस्तान के 89 जवान मारे गए. पाकिस्तानी सेना को मैदान छोड़ने पर मजबूर कर दिया था. जयंती पर आइए जान लेते हैं मेजर होशियार सिंह दहिया के किस्से.

दिनेश पाठक

पहलगाम में पर्यटकों पर हुए आतंकवादी हमले के बाद एक बार फिर से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच चुका है. यहां तक कि दोना. देशों में युद्ध की आशंका जताई जा रही है. इससे पहले भी दोनों देशों के बीच चार युद्ध हो चुके हैं, जिसमें नापाक इरादों वाले पाकिस्तान को हमेशा मुंह की खानी पड़ी है. इन चार युद्धों में भारतीय सेनाओं के अफसरों और जवानों ने अदम्य साहस का परिचय दिया. इन्हीं में से एक थे मेजर होशियार सिंह दहिया.

साल 1971 में हुए बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में मेजर होशियर सिंह ने बसंतर में मोर्चा संभाला और जख्मी होने के बावजूद पाकिस्तानी सेना को मैदान छोड़ने पर मजबूर कर दिया था. जयंती पर आइए जान लेते हैं मेजर होशियार सिंह दहिया के किस्से.

हरियाणा में हुआ था जन्म

पांच मई 1936 को मेजर होशियार सिंह दहिया का जन्म हरियाणा के सोनीपत स्थित एक गांव सिसाना में हुई था. स्थानीय हाईस्कूल में शुरुआती शिक्षा के बाद वह जाट सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पढ़ने पहुंचे. पढ़ने में होशियार होशियार सिंह खेल. कूद में भी हमेशा आगे रहते थे. इसके कारण उनका चयन राष्ट्रीय चौम्पियनशिप के लिए पंजाब की कंबाइंड बॉलीबाल टीम में हो गया. यही टीम बाद में राष्ट्रीय टीम का हिस्सा बनी. टीम के कैप्टन हो. शियार सिंह ही थे. उनका एक मैच जाट रेजिमेंटल सेंटर के एक अफसर ने देखा तो होशियार सिंह से काफी प्रभावित हो गए. उनके कारण होशियार सिंह फौज की ओर आकर्षित हुए और साल 1957 में जाट रेजिमेंट का हिस्सा बने. फिर 3-ग्रेनेडियर्स में अफसर नियुक्त किए गए. होशियार सिंह ने साल 1965 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध में अहम भूमिका निभाई.

1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में संभाला मोर्चा

यह साल 1971 में हुए भारत-पाकिस्तान युद्ध की बात है. बांग्लादेश की आजादी के लिए हुए इस युद्ध के बाद पूर्वी पाकिस्तान को एक अलग देश बांग्लादेश बनाया गया था. पाकिस्तान के साथ इस युद्ध को भारत को कई अलग-अलग मोर्चों पर लड़ना पड़ा था. इन्हीं में से एक मोर्चे का जिम्मा मेजर होशियार सिंह को सौंपा गया था. वह मोर्चा था शंकरगढ़ पठार में स्थित बसंतर का मोर्चा.

शकरगढ़ पठार का 900 किलोमीटर का इलाका बेहद संवदेनशील था. यही नहीं, यह इलाका प्राकृतिक बाधाओं से भरा था. दुश्मन ने यहां बारूदी सुरंगें भी बिछा रही थीं. 3 ग्रेनेडियर्स के कमांडिंग अफसर को 14 दिसम्बर 1971 को सुपवाल खाई पर हमले का आदेश दिया गया. तब 3 ग्रेनेडियर्स को जरवाल और लोहाल गांवों पर अपना कब्जा करना था. इस आदेश के बाद 15 दिसम्बर 1971 को 3 ग्रेनेडियर्स की दो कम्पनियां आगे बढ़ीं. इनमें से एक का नेतृत्व मेजर होशियार सिंह कर रहे थे. दोनों कम्पनियों ने दुश्मन की भारी गोलाबारी और बमबा. री के बावजूद अपने-अपने मोर्चे पर हासिल कर ली. साथ ही 20 पाकिस्तानी सैनिकों को युद्ध बंदी बना लिया. उनसे भारी मात्रा में हथियार और गोलाबारूद बरामद किए.

घायल हुए मेजर होशियार सिंह

इस जीत के अगले ही दिन यानी 16 दिसम्बर 1971 को 3 ग्रेनेडियर्स बटालियन पर दुश्मनों ने जोरदार हमला कर दिया. दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ. जवाबी हमला कर पाकिस्तान अपना गंवाया क्षेत्र वापस पाने की कोशिश में था. हालांकि, दुश्मन को मात दे चुके भारतीय सैनिकों का मनोबल काफी बढ़ा था. ऐसे में भारतीय सैनिक पाकिस्तान के हमलों को लगातार नाकाम कर रहे थे. 17 दिसम्बर 1971 को सूर्योदय के साथ ही पाकिस्तान की एक बटालियन ने बम और गोलियों से मेजर हो. शियार सिंह की कम्पनी पर हमला बोल दिया.

हालांकि, मेजर होशियार सिंह डिगे नहीं और जवानों का हौसला बढ़ाते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देते रहे. इसमें पाकिस्तान के कई सैनिक ढेर हुए. मेजर होशियार सिंह भी दुश्मनों की भारी गोल. ीबारी की चपेट में आकर घायल हो गए.

पाकिस्तानी कमांडिंग अफसर को मार गिराया

घायल होने के बावजूद मेजर होशियार सिंह अपनी कम्पनी के सैनिकों का मनोबल बढाते रहे. घायल अवस्था में ही उन्होंने एक मीडियम मशीनगन थाम ली. इससे कम्पनी के दूसरे सैनिकों का जोश और भी बढ़ गया. वे दुश्मनों पर टूट पड़े. उस दिन लड़ाई में पाकिस्तान के 89 जवान मारे गए. इनमें पाकिस्तान का कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनेंट कर्नल मोहम्मद अकरम राजा भी था. पाकिस्तान की 35 फ्रंटियर फोर्स राइफल्स के इस अफसर को भारतीय सैनिकों ने अपने तीन अधिकारियों के साथ मिलकर ढेर किया था.

अदम्य साहस के लिए मिला परमवीर चक्र

युद्ध चल ही रहा था कि शाम छह बजे मेजर हो. शियार सिंह की कम्पनी को आदेश मिला कि दो घंटे बाद युद्ध विराम हो जाएगा. ऐसे में भारतीय सेना की कम्पनियां ज्यादा से ज्यादा तगड़े वार कर पाकिस्तानियों को युद्ध में धूल चटाने में लगी थीं. युद्ध विराम का जब तक समय आया, मेजर होशियार सिंह की 3 ग्रेनेडियर्स का एक अधिकारी और 32 फौजी अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके थे. तीन अधिकारी, चार जूनियर कमीशंड अधिकारी और 86 जवान घायल भी हुए थे. इसके बावजूद मेजर हो. शियार सिंह ने अपनी टीम के साथ पूरी शिद्दत से अपनी जिम्मेदारी निभाई.

युद्ध खत्म होने के बाद मेजर होशियार सिंह की कम्पनी को इस मोर्चे पर जीत का सारा श्रेय दिया गया. मेजर होशियार सिंह को कुशल नेतृत्व, असाधारण युद्ध कौशल और अदम्य साहस के लिए भारत सरकार ने सर्वोच्च भारतीय सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से नवाजा.

वह यह सम्मान पाने वाले पहले जीवित अधिकारी थे. कर्नल के रूप में रिटायर हुए मेजर होशियार सिंह दहिया ने छह दिसंबर 1998 को इस दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया.

वो भारतीय जो पाकिस्तान के 90 हजार सैनिकों को घुटनों पर ले आया, जानें कौन था इंडो-पाक जंग का हीरो

नई दिल्ली

साल 1971 में बांग्लादेश की आजादी के लिए पाकिस्तान से लोहा लेने वाले भारत का पूरी दुनिया ने लोहा माना था. बांग्लादेश की आजादी में उसका साथ देने वाले भारत ने अपनी सेना की पूरी ताकत झोंक दी थी. भारतीय सेना का बांग्लादेश की आजादी में अहम योगदान रहा. भारतीय सेना बांग्लादेश के साथ नहीं खड़ी होती तो उसको शायद आजादी नहीं मिल पाती. इस युद्ध में अहम भूमिका निभाने वाले भारतीय सेना के अफसरों में से एक थे लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, जिनके बारे में फील्ड मार्शल जनरल मानेकशॉ ने कहा था, असली काम तो जगजीत सिंह ने ही किया था.

उनकी पुण्यतिथि पर आइए जान लेते हैं कि लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा कैसे भारत-पाकिस्तान जंग के हीरो बने थे?

पाकिस्तान से हुए युद्धों का हिस्सा रहे

लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा का जन्म अविभाजित भारत में 13 फरवरी 1916 को हुआ था. उनका जन्म स्थान झेलम जिले का कल्ले गुज्जरन अब पाकिस्तान में है. साल 1939 में जगजीत सिंह अरोड़ा को ब्रिटिश इंडिया की सेकेंड पंजाब रेजिमेंट की पहली बटालियन में कमीशन मिला. देश की स्वाधीनता के समय साल 1947 में जगजीत सिंह अरोड़ा सेना में कैप्टन थे. वह आजादी के बाद भारत-पाकिस्तान और भारत-चीन के बीच हुए तीनों युद्धों का हिस्सा रहे. उन्होंने साल 1962 में भारत और चीन का युद्ध ब्रिगेडियर के रूप में लड़ा था. सैन्य अफसर के रूप में साल 1971 में उन्होंने बांग्लादेश की स्वाधीनता की लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाया. इसके लिए उनको परम विशिष्ट सेवा मेडल और पद्म भूषण से नवाजा गया. सेना से रिटायरमेंट के बाद साल 1986 में उनको अकाली दल ने राज्यसभा भेजा. 3 मई 2005 को 89 साल की आयु में उन्होंने हमेशा के लिए आंखें बंद कर ली थीं.

बंटवारे के बाद से ही होने लगा था अत्याचार

दरअसल, भारत का बंटवारा कर बनाए पाकिस्तान के पूर्वी हिस्से में रहने वालों पर आजादी के बाद अत्याचार होने लगे थे. वे नए देश का हिस्सा तो बन गए थे पर असली आजादी नहीं मिली थी. इसीलिए वे कसमसा रहे थे. साल 1971 आते-आते पूर्वी पाकिस्तान से भारत में इतनी बड़ी संख्या में शरणार्थी आने लगे कि वे भारत के लिए समस्या बनने लगे थे. इस पर भारत ने आजादी की लड़ाई में पूर्वी पाकिस्तान का साथ देने का फैसला किया और इसके लिए खास ऑपरेशन तैयार किया गया.

पाकिस्तान से युद्ध नहीं चाहती थी भारतीय सेना

पूर्वी पाकिस्तान को पाकिस्तान से आजाद कराने के लिए तैयार किए गए ऑपरेशन का नेतृत्व तत्कालीन लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा को सौंपा गया था. तब वह भारतीय सेना की पूर्वी कमांड के कमांडर थे. ऑपरेशन शुरू होने के साथ ही भारत-पाकिस्तान में तनाव बढ़ने लगा. वैसे भारतीय सेना तब कोई जंग नहीं चाहती थी. भारतीय सेना को इस बात के लिए खास ताकीद भी की गई थी कि पाकिस्तान के साथ युद्ध की नौबत न आए. वहीं, पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा था. उसे लग रहा था कि पूर्वी पाकिस्तान में आजादी की लड़ाई को तो कुचल ही देगा, भारत को भी युद्ध में हराएगा. इसीलिए उसने भारत पर हमला कर दिया.

तेजी से आगे बढ़ी भारत की सेना

हालांकि, पाकिस्तान ने हमला किया तब भला भारत कहां पीछे रहने वाला था. जनरल मानेकशॉ की अगुवाई में लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह जैसे जाबा. ंजों ने नए सिरे से रणनीति बनाई और पाकिस्तान की सेना पर टूट पड़े. पाकिस्तान के हमले का भारतीय सेना मुंहतोड़ जवाब देने लगी. साल 1971 के इस युद्ध में भारत के कदम तेजी से आगे बढ़ने लगे और पाकिस्तानी सेना पीछे हटने लगी.

नियाजी को लेना पड़ा सरेंडर का फैसला

युद्ध में अपनी सेना को होने वाला भारी भरकम नुकसान देखकर पाकिस्तान के तत्कालीन लेफ्टिनेंट जनरल आमिर अब्दुल्लाह खान नियाजी ने पीछे हटने का निर्णय लिया. इसके साथ ही भारत के सामने सरेंडर करने के लिए पाकिस्तान तैयार हो गया. इसके साथ पाकिस्तान के 90 हजार सैनिकों ने हार मानते हुए हथियार डाल दिए थे. लेफ्टिनेंट जनरल नियाजी ने भारतीय कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा को वायरलेस सन्देश भेज कर आत्मसमर्पण करने की जानकारी दी तो भारतीय सेना भी पाकिस्तान की सरहद छोड़ने को तैयार हो गई.

इस संदेश के बाद जनरल मानेकशॉ ने तय किया कि सरेंडर कराने के लिए भारत की ओर से लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा जाएंगे. भारत की ओर से समझौते के जो दस्तावेज भिजवाए गए, उसमें लिखा था कि पाकिस्तान का जो भी अफसर और सैनिक आत्मसमर्पण करेगा, जेनेवा समझौते के तहत उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी ली जाएगी. जनरल नियाजी से सरेंडर कराने गए लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अपनी पत्नी भगवंत कौर को भी साथ ले गए थे.

छब्बे चक में पीएम आवास योजना की खुली पोल, 7 साल से कच्चे मकान में रह रहा परिवार

भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप, पात्रों को नहीं मिल रहा योजना का लाभ, प्रशासन से जांच की मांग

छब्बे चक्क मे रहने वालें स्थानीय जानकारी देते

राज कुमार/सनी शर्मा

मढ़ीन/हीरानगर : तहसील मढ़ीन के नजदीकी गांव छब्बे चक में प्रधानमंत्री आवास योजना (च्ड।ल) की जमीनी हकीकत एक बार फिर उजागर हुई है। गांव के शाम लाल पुत्र गुरदयाल पिछले सात वर्षों से कच्चे मकान में जीवन गुजार रहे हैं और अब भी पक्के घर की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

शाम लाल ने बताया कि दो बार उनका नाम योजना में भेजा गया, लेकिन उन्हें अब तक योजना का लाभ नहीं मिल पाया। वहीं गांव के ही मोहन लाल पुत्र अमरनाथ ने प्रशासन पर गंभीर सवाल उठाते हुए आरा. `प लगाया कि ग्राम सेवक सिर्फ औपचारिकताएं निभाकर फोटो खिंचवाते हैं, जबकि मकान की ग्रांट किसी और को दे दी जाती है।

मोहन लाल ने जिला प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है। उनका कहना है कि गरीबों के हक को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ाया जा रहा है।

स्थानीय लोगों ने भी योजना को लेकर नाराजगी जताई और कहा कि सरकारी योजनाओं का लाभ सही पात्रों तक नहीं पहुंच रहा। उन्होंने प्रशासन से पारदर्शिता सुनिश्चित करने और जरूरतमंदों को उनका अधिकार दिलाने की मांग की है।

आरोपों पर क्या कहा प्रशासन ने?

मोहनलाल भगत द्वारा लगाए गए आरोपों को लेकर जब हमारे संवाददाता ने तत्कालीन ग्राम सेवक और वर्तमान बीडीओ मढ़ीन से संपर्क करने की कोशिश की, तो ग्राम सेवक ने बताया कि उनके कार्यकाल के दौरान उन्होंने मोहनलाल भगत के परिवार से वेरिफिकेशन के लिए दस्तावेज़ मांगे थे, जो उन्हें समय रहते उपलब्ध नहीं करवाए गए।

वहीं जब बीडीओ मढ़ीन से कार्यालय में संपर्क करने पहुंचे तो वह मौजूद नहीं मिले। बीडीओ कार्यालय में कार्यरत कर्मियों ने बताया कि वह जिला मिनी सचिवालय में बैठक में शामिल होने गए हैं।

कानेचक से कुंदेचक और फिर सुल्तानपुर तक की सड़क की बदहाली बनी लोगों की बड़ी परेशानी

रिटायर्ड सूबेदार करनैल सिंह व परषोतम लाल ने उठाई आवाज – बच्चों की पढ़ाई और आम जनजीवन पर पड़ा असर

सड़क की बदहाली की तस्वीरे

स्थानीय लोग जानकारी देते

राज कुमार/सनी शर्मा

कानेचक/कुंदेचक/मढ़ीन : कानेचक से कुंदेचक और आगे सुल्तानपुर तक जाने वाली सड़क की खस्ता हालत को लेकर ग्रामीणों में भारी नाराजगी है। टूटी सड़कें, गहरे गड्ढे और बरसात में कीचड़ से लोग बेहद परेशान हैं। क्षेत्र के वरिष्ठ नागरिक और रिटायर्ड सूब. `दार करनैल सिंह व परषोतम लाल ने इस मुद्दे पर प्रशासन को घेरते हुए कहा कि यह सड़क अब दुर्घटना का कारण बन रही है और सरकार इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रही।

उन्होंने कहा कि "इस बदहाल सड़क से हर रोज सैकड़ों लोग गुजरते हैं, जिनमें छोटे बच्चे, बुजुर्ग और स्कूल–कॉलेज जाने वाले छात्र–छात्राएं शामिल हैं। स्कूली बच्चों को सबसे ज्यादा दिक्कत होती है। गड्ढों में फिसलकर गिरने की घटनाएं आम हो गई हैं।"

स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़कों की हालत इतनी खराब है कि वाहन निकालना भी मुश्किल हो गया है।

"न बिजली है, न पानी, ऊपर से सड़कें भी इस हालत में हैं, फिर सरकार रोजगार और विकास की बातें किस मुंह से करती है?" दृ एक ग्रामीण ने गुस्सा जाहिर करते हुए कहा।

कुंदेचक से सुल्तानपुर तक की सड़क ग्रामीण क्षेत्र की जीवनरेखा मानी जाती है, लेकिन बदइंतजामी और लापरवाही के कारण यह आज खुद एक बड़ी समस्या बन चुकी है।

ग्रामीणों और समाजसेवियों ने मिलकर प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द इस सड़क की मरम्मत हो और क्षेत्र में मूलभूत सुविधाएं बहाल की जाएं। चेता. वनी दी गई है कि अगर सरकार ने शीघ्र कार्रवाई नहीं की तो जन आंदोलन छेड़ा जाएगा।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

बजुह नदी बचाओ अभियान ने पकड़ा जोर, म्यूनिसिपल कमेटी की कार्यप्रणाली पर उठे गंभीर सवाल

नगरी में जगह–जगह लगे हाउसिंग एंड अर्बन डिवेलपमेंट विभाग के पोस्टर, जो लोगों को स्वच्छता और जल स्रोतों को बचाने का संदेश दे रहे हैं, लेकिन म्यूनिसिपल कमेटी इन संदेशों को ही नजरअंदाज कर रही है।

बजुह नदी की पुकार – स्वच्छता नहीं तो संघर्ष तय!

बजुह नदी के किनारे फैली गंदगी | 'बजुह बचाओ अभियान' के समर्थन में प्रतिक्रिया देते नगरवासी

ऐतिहासिक बजुह नदी बचाओ अभियान को लेकर जनता में बढ़ रहा आक्रोश, प्रशासन की दोहरी नीति पर उठे सवाल

बजुह नदी बचाओ अभियान को मिल रहा समर्थन, युवाओं ने जिला प्रशासन से की हस्तक्षेप की मांग

नगरी म्यूनिसिपल कमेटी ही बनी बजुह नदी के प्रदूषण की जिम्मेदार, पर्यावरण दिवस पर उजागर हुआ दोहरा चेहरा

जनता की एक ही मांग – बजुह नदी को बचाओ, भविष्य को बचाओ

बजुह नदी पर संकट गहराया, सफाई की मांग को लेकर भड़का जनआक्रोश

ऐतिहासिक बजुह नदी बचाओ अभियान को लेकर जनता में बढ़ रहा आक्रोश, प्रशासन की दोहरी नीति पर उठे सवाल

बजुह नदी बचाओ अभियान को मिल रहा समर्थन, युवाओं ने जिला प्रशासन से की हस्तक्षेप की मांग

बजुह नदी की पुकार – स्वच्छता नहीं तो संघर्ष तय!

नगरी म्यूनिसिपल कमेटी ही बनी बजुह नदी के प्रदूषण की जिम्मेदार, पर्यावरण दिवस पर उजागर हुआ दोहरा चेहरा

जनता की एक ही मांग – बजुह नदी को बचाओ, भविष्य को बचाओ

राज कुमार

नगरी, एक ओर सरकार स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण को लेकर देशभर में जागरूकता फैलाने का दावा कर रही है, वहीं दूसरी ओर नगरी कस्बे की ऐतिहासिक और पवित्र बजुह नदी की हालत इन दावों की सच्चाई पर सवाल खड़े कर रही है।

स्थानीय निवासी मदन शर्मा समेत अन्य लोगों ने आरोप लगाया कि बीते कई वर्षों से म्यूनिसिपल कमेटी नगरी की लापरवाही के चलते इस नदी में गंदगी का अंबार बढ़ता जा रहा है। उनका कहना है कि म्यूनिसिपल कमेटी स्वयं इस नदी में कूड़ा–कचरा डालकर इसे प्रदूषित करने में अहम भूमिका निभा रही है।

प्रशासन से ठोस कार्रवाई की मांग

स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से गुहार लगाई है कि इस ऐतिहासिक धरोहर को बचाने के लिए तुरंत प्रभाव से उचित कदम उठाए जाएं। उनका कहना है कि यह सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि नगरी की पहचान, आस्था और पर्यावरण संतुलन से जुड़ा विषय है।

सरकारी विभाग खुद बन रहे प्रदूषण के कारण

लोगों ने यह भी सवाल उठाया कि जब सरकार जल स्रोतों को बचाने और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए प्रचार अभियान चला रही है, तो उसी सरकार के अधीन काम करने वाले विभाग इसे गंदा करने से क्यों नहीं रुक रहे।

पूर्व पार्षदों की चुप्पी पर सवाल

इस मुद्दे पर अधिकांश पूर्व पार्षदों की चुप्पी पर भी जनता ने नाराजगी जताई है। हालांकि, कुछ जनप्रतिनिधियों ने बजुह नदी बचाओ अभियान को सराहनीय पहल बताते हुए जनता का समर्थन किया है।

हाउसिंग एंड अर्बन डिवेलपमेंट विभाग के पोस्टर, पर काम शून्य शहर के विभिन्न हिस्सों में हाउसिंग एंड अर्बन डिवेलपमेंट विभाग द्वारा लगाए गए पोस्टरों में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जल स्रोतों को बचाने के संदेश दिए गए हैं। लेकिन इन संदेशों को नगरी म्यूनिसिपल कमेटी पूरी तरह से अनदेखा कर रही है।

स्थानीय लोगों की चेतावनी

नागरिकों ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि समय रहते प्रशासन और म्यूनिसिपल कमेटी द्वारा इस ओर गंभीर कदम नहीं उठाए गए, तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। यह अब सिर्फ सफाई का मुद्दा नहीं, बल्कि जनआस्था और जनसम्मान का प्रश्न बन चुका है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष

मेष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह कभी खुशी कभी गम लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आपक.ो निजी जीवन से लेकर करियर–कारोबार तक में उतार–चढ़ाव देखने को मिल सकते हैं। हालांकि सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहने वाली है। इस दौरान व्यक्तिगत और पेशेवेर रूप से खुद को मजबूत पाएंगे। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। युवाओं का अधिकांश समय मौज–मस्ती करते हुए बीतेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। सप्ताह के मध्य में आपको करियर–कारोबार में कुछ अप्रत्याशित बदलाव को झेलना पड़ सकता है।

इस दौरान नौकरीपेशा लोगों के सिर पर अचानक से अतिरिक्त जिम्मेदारी का बोझ आ सकता है। जिसे पूरा करने के लिए आपको अधिक समय और ऊर्जा खर्च करने की आवश्यकता रहेगी।

वृषभ

वृष राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी है। वृष राशि के जो जातक किसी कार्य विशेष के लिए बीते कुछ समय से लगातार प्रयासरत हैं, उन्हें इस सप्ताह भी उससे जुड़ी सफलता के लिए इंतजार करना पड़ सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले उनका पूर्वार्ध थोड़ा राहत भरा रहने वाला है।

ऐसे में इस राशि के जातकों को अपने करियर–कारोबार और जीवन से जुड़े अहम कार्यों को इसी दौरान करने का प्रयास करना चाहिए। सप्ताह के मध्य में किसी व्यक्ति विशेष से मेल–मुलाकात होगी। जिसकी मदद से अटके कार्यों में धीमी गति से ही लेकिन प्रगति होती नजर आएगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में न सिर्फ कार्यक्षेत्र से जुड़ी बल्कि घर–परिवार से संबंधित समस्याएं भी आपकी परेशानी का कारण बन सकती हैं। इस दौरान पैतृक संपत्ति अथवा किसी जमीन–जायदाद को लेकर विवाद हो सकता है। अचानक से जीवन में तमाम तरह की समस्याएं सामने आने से आपका मन थोड़ा विचलित रह सकता है। हालांकि सुखद पहलू यह है कि इस दौरान आपके संगी–साथी आपकी ढाल बनेंगे और आपके साथ साए की तरह बने रहेंगे।

मिथुन

मिथुन राशि के जातकों को इस सप्ताह सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। यदि आप किसी कार्य विशेष के लिए लंबे समय से प्रयासरत थे तो उम्मीद का दामन बिल्कुल न छोड़ें क्योंकि इस सप्ताह उसमें आ रही बाधाएं स्वतरू दूर होती हुई नजर आएंगी। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय नौकरीपेशा लोगों के लिए अनुकूल रहने वाला है।

इस दौरान आपके शुभचिंतक आपको नेक सलाह देते हुए नजर आएंगे, जिस पर अमल करके आप अपनी चीजों को सुव्यवस्थित कर सकते हैं। सप्ताह के मध्य में किसी तीर्थ स्थान पर जाने का अचानक प्रोग्राम बन सकता है। इस पूरे सप्ताह घरेलू महिलाओं का मन धार्मिक–कार्यों में खूब रमेगा। किसी धार्मिक–आध्यात्मिक व्यक्ति की विशेष कृपा आप पर बरस सकती है। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आपके लिए सप्ताह के पूर्वार्ध के मुक.ाबले उत्तरार्ध ज्यादा शुभ रहने वाला है। इस दौरान आप आप समझदारी के साथ अपने पैसे का सही जगह निवेश करते हैं तो आपको उससे भविष्य में बड़ा लाभ मिल सकता है। उच्च शिक्षा के लिए प्रयासरत लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लेकर आएगा।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिश्रित फलदायक रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातक.ों को किसी भी फैसले को लेते समय जल्दबाजी करने से बचना चाहिए। रिश्ते–नाते में मिठास बनी रहे और किसी प्रकार की गलतफहमी न पैदा हो इसके लिए स्वजनों के साथ संवाद बनाए रखें।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार के सिलसिले में बड़े फैसले लेने पड़ सकते हैं। ऐसा करते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर को मिलाकर चलें। यदि कार्यक्षेत्र पर हालात आपके अनुकूल नहीं हैं तो आप उससे बजाय भागने के उसे बेहतर बनाने का प्रयास करें। भूलकर भी आवेश में आकर नौकरी में बदलाव जैसा फैसला लेने से बचें। सप्ताह के मध्य में घरेलू समस्याओं के चलते आपका मन थोड़ा खिन्न रहेगा। इस दौरान आपको आपके विरोधी आप पर हावी होने तथा आपके बनते काम बिगाड़ने की कोशिश कर सकते हैं।

सिंह

सिंह राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मध्यम फलदायी रहने वाला है। इस सप्ताह इस राशि के जातक.ों को अपनी ऊर्जा, धन और समय का प्रबंधन करके चलना उचित रहेगा। सप्ताह की शुरुआत में आपके सिर पर अचानक से कुछ बड़े खर्च आ सकते हैं। इस दौरान कार्य विशेष के लिए लंबी दूरी की यात्रा पर भी अचानक निकलना पड़ सकता है। यात्रा सुखद और नये संपर्कों को बढ़ाने वाली साबित होगी। व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए सप्ताह के उत्तरार्ध के मुकाबले पूर्वार्ध का समय ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। ऐसे में आपको अपने कारोबार से जुड़े बड़े फैसले इसी दौरान करने चाहिए। सप्ताह के मध्य में आप कुछ चीजों को लेकर खुद को असमंजस की स्थिति में पा सकते हैं। ऐसे में इस दौरान कोई बड़ा फैसला लेते समय अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें। नौकरीपेशा जातकों इस सप्ताह अपने कार्य दूसरों के भरोसे छोड़ने की बजाय स्वयं बेहतर तरीके से पूरे करने का प्रयास करना चाहिए अन्यथा पूर्व में की गई न सिर्फ आपकी मेहनत बेकार जा सकती है, बल्कि वरिष्ठ अधिकारियों की डांट भी सुननी पड़ सकती है।

कन्या

कन्या राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। यदि आप चाहते हैं कि आपको जीवन में मनचाही सफलता और खुशियां मिले तो आपको अपने कार्य और व्यवहार में आमूलचूल बदलाव लाना होगा और अपने शुभचिंतकों को नाराज करने से बचना होगा। इस सप्ताह आपकी किसी बात या व्यवहार से आपके अपने नाराज हो सकते हैं। वाद–विवाद बढ़ने पर वर्षों से बने रिश्ते में दरार आ सकती है। करियर–कारोबार से लेकर घर–परिवार में सब कुछ अच्छा बना रहे इसके लिए दूसरों से अपेक्षा करने करने की बजाय आपको खुद ही आगे बढ़कर प्रयास करना होगा।

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो अपने कार्यक्षेत्र में कनिष्ठ लोगों के साथ रुखा व्यवहार न करें और अपने वरिष्ठ लोगों के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। यदि आप व्यवसायी हैं तो शार्टकट तरीके से लाभ कमाने से बचें और कागजी काम पूरे करके रखें। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो धन का लेनदेन सावधानी के साथ करें।

तुला

तुला राशि के जातकों के लिए करियर और कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह उत्तम और रिश्ते–नाते की दृष्टि से मध्यम फलदायी रहने वाला है।

सप्ताह की शुरुआत में आपको करियर–कारोबार से जुड़ा कोई बहुप्रतीक्षित शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। इस सप्ताह तुला राशि का नौकरीपेशा जातक हो या फिर व्यवसाय से जुड़ा कारोबारी, वह अपना शत प्रतिशत अपने कार्य में देता हुआ नजर आएगा।

खास बात कि उसके प्रयासों को सौभाग्य का भी पूरा साथ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी और सीनियर आपके कामकाज की खुले मन से प्रशंसा करते हुए नजर आएंगे। सप्ताह के अंत तक आपको बड़ा पद अथवा अहम जिम्मेदारी मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से किसी नये कारोबार की शुरुआत करने अथवा किसी बड़ी डील को फाइनल करने के लिए प्रयासरत थे तो आपकी यह मनोकामना इस सप्ताह पूरी हो सकती है। यदि आप लंबे समय से रोजी–रोजगार के लिए प्रयासरत थे तो सप्ताह के उत्तरार्ध में आपकी यह मनोकामना पूरी हो सकती है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए है। इस सप्ताह आपको जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शुभता–सफलता की प्राप्ति होगी। इस सप्ताह आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। करियर–कारोबार में मनचाही प्रगति होती नजर आएगी। कार्यक्षेत्र में आपको सीनियर और जूनियर दोनों का सहयोग और समर्थन मिलेगा। व्यवसाय में अच्छा मुनाफा कमाएंगे। यदि आपके कारोबार में बीते समय से कोई अड़चन आ रही थी इस सप्ताह वह किसी व्यक्ति विशेष की मदद से दूर हो जाएगी। मार्केट में आपकी साख बढ़ेगी। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय करते हैं तो आप उसके विस्तार की योजना पर काम करेंगे। आपकी योजना को साकार रूप देने के लिए आपके शुभचिंतक और परिजन पूरी मदद करेंगे। इस संबंध में घर–परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की सलाह लाभदायी साबित होगी। यह सप्ताह पठन–पाठन एवं शोध से जुड़े कार्यों को करने वालों के लिए अत्यधिक शुभ साबित होगा।

धनु

धनु राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह जीवन के नये अवसरों को लेकर आने वाला है, लेकिन उसका लाभ उठाने के लिए आपको आलस्य और आशंका को त्याग कर कठिन परिश्रम और प्रयास करना होगा। इस सप्ताह यदि आप अपने धन, समय और उर्जा का सही दिशा में उपयोग करते हैं तो आपको आशा से अधिक सफलता और लाभ मिल सकता हैं। वहीं इसकी अनदेखी करने पर बनते काम बिगड़ जाने से मन में निराशा के भाव जाग सकते हैं। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह खुले हाथ धन खर्च करने से बचना चाहिए अन्यथा सप्ताह के अंत तक उन्हें उधार मांगने की नौबत आ सकती है। व्यवसाय की दृष्टि से यह सप्ताह आपके लिए मिश्रित फलदायी साबित होने वाला है। इस सप्ताह आपको कारोबार में लाभ तो होगा लेकिन साथ ही साथ खर्च की अधिकता भी बनी रहेगी। धनु राशि के जातकों को इस सप्ताह मौसमी बीमारी को लेकर सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। अपनी दिनचर्या और खानपान सही रखें अन्यथा पेट संबंधी दिक्कतें हो सकती है। परीक्षा–प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को सप्ताह के मध्य में किसी सुखद समाचार की प्राप्ति संभव है।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह उतार–चढ़ाव लिए रहने वाला है। इस सप्ताह आप अपने करियर–कारोबार में आ रही अड़चनों को लेकर चिंतित रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र और कारोबार के अलावा निजी जीवन से जुड़ी समस्याएं भी आपकी बड़ी चिंता का कारण बनेंगी। हालांकि जीवन के कठिन समय में आपके शुभचिंतक एवं परिजन काफी मददगार साबित होंगे और काफी हद तक आप इन समस्याओं का समाधान खोजने में भी कामयाब होंगे। सप्ताह के मध्य में किसी भी कार्य को करते समय विशेष सावधानी बरतें। इस दौरान जल्दबाजी या असमंजस की स्थिति में लिया गया निर्णय आपके लिए हानिकारक साबित हो सकता है। इस दौरान स्वजनों के साथ बात–व्यवहार करते समय विनम्रता से पेश आएं अन्यथा लंबे समय से बने हुए रिश्तों में दरार आ सकती है। इस सप्ताह खर्च की अधि.कता के चलते आपका बजट थोड़ा गड़बड़ा सकता है। सप्ताह के उत्तरार्ध में करियर–कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा पर निकलना पड़ सकता है।

कुंभ

जीवन में आने वाली छोटी–मोटी दिक्कतों को यदि नजरअंदाज कर दें तो कुंभ राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह शुभ साबित होगा। इस सप्ताह आपको आपकी मेहनत का पूरा फल प्राप्त होगा। करियर और कारोबार की दिशा में किए गये प्रयास सफल होंगे और आपके पद एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह सप्ताह गुडलक लिए हुए है। इस सप्ताह आपकी झोली में कोई बड़ा पद गिर सकता है। सत्तापक्ष से जुड़े लोगों के साथ आपका मेल–मिलाप बढ़ेगा। आपके मान–सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अनुकूलता बनी रहेगी। आप अपनी सूझबूझ से अपने विरोधियों पर काबू पाने में कामयाब होंगे। कुंभ राशि के जो जातक तकनीक के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इसी प्रकार इलेक्ट्रानिक का कारोबार करने वालों को बड़े लाभ की प्राप्ति होगी। सप्ताह के उत्तरार्ध में किसी वरिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति से कार्य विशेष के लिए मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए यह सप्ताह मिलाजुला रहने वाला है। सप्ताह के पूर्वार्ध का समय जहां अनुकूल तो वहीं उत्तरार्ध थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। ऐसे में मीन राशि के जातकों को जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों सप्ताह की शुरुआत में ही निबटाने का प्रयास करना चाहिए। यदि आप बेरोजगार हैं तो आपको इसी दौरान पूरे मनोयोग से रोजी–रोजगार के लिए प्रयास करना चाहिए। इस दौरान किसी व्यक्ति विशेष की मदद से भूमि–भवन से जुड़े विवाद का समाधान निकल सकता है। मीन राशि के जातकों को इस सप्ताह इस बात का पूरा ख्याल रखना होगा कि उनकी बात से ही बात बनेगी और बात से ही बात बिगड़ भी सकती है। ऐसे में अपना काम निकलवाने के लिए लोगों की प्रशंसा करने में जरा भी कंजूसी न करें और सभी के साथ अच्छा तालमेल बनाए रखें। सप्ताह के पूर्वार्ध में आपके घर में कोई धार्मिक अथवा मांग.लिक कार्यक्रम संपन्न हो सकता है। इस दौरान घरेलू महिलाओं का अधिकांश समय पूजा–पाठ में बीतेगा।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

पुल निर्माण के लिए हटाए गए घर, एसडीएम की निगरानी में बीआरओ ने की कार्रवाई

कार्रवाई करते एसडीएम कि देखरेख मे बीआरओ कि टीम

सनी शर्मा

मुकुंदपुर/मढ़ीन, : बीआरओ विभाग द्वारा मुकंदपुर क्षेत्र में पुल निर्माण कार्य के दौरान उत्पन्न हो रहे अवरोधों को दूर करने के लिए गुरुवार को प्रशासन की निगरानी में चिन्हित घरों को हटाया गया। यह कार्रवाई एसडीएम की देखरेख में शांति पूर्ण ढंग से संपन्न हुई।

मौके पर जानकारी देते हुए एसडीएम ने बताया कि पुल निर्माण के लिए बीआरओ द्वारा पहले से जिन स्थानों को चिन्हित किया गया था, उन्हीं स्थानों को खाली कराया गया है।

प्रभावित परिवारों को पहले ही इसकी सूचना दे दी गई थी और घर खाली करने वालों को मुआवजे की 50 प्रतिशत राशि अग्रिम रूप से प्रदान कर दी गई है।

अधिकारियों ने बताया कि प्रशासन का उद्देश्य था कि नागरिकों को न्यूनतम असुविधा हो और विकास कार्य सुचारु रूप से जारी रह सके।

ुल निर्माण के पूरा होने के बाद स्थानीय लोगों को यातायात के साथ–साथ अन्य बुनियादी सुविधाओं में भी काफी राहत मिलेगी और क्षेत्र के विकास को गति मिलेगी।

प्रशासन ने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में भी किसी भी निर्माण कार्य में पारदर्शिता और जनहित को प्राथमिकता दी जाएगी।

विपक्ष ने सत्र की पूर्व संध्या पर पहलगाम हमले, ट्रंप की टिप्पणी और एसआईआर का मुद्दा उठाया; सरकार ने कहा कि नियमों के अनुसार सभी मुद्दों पर चर्चा के लिए तैयार है

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

नई दिल्ली, : सरकार ने रविवार को संसद में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा करने की इच्छा जताई, जो मानसून सत्र की पूर्व संध्या पर सर्वदलीय बैठक में विपक्ष की एक प्रमुख मांग थी। वहीं, भारतीय दल ने इस बात पर जोर दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस मामले के साथ–साथ अमेरिकी राष्ट्रपति के श्संघर्ष विरामश के दावों और बिहार में एसआईआर पर भी जवाब देना चाहिए।

सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री द्वारा संसद में इन मुद्दों पर जवाब देने की संभावना नहीं है। हालाँकि, संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने ज़ोर देकर कहा कि जब भी भारत–पाकिस्तान संघर्ष पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के युद्धविराम के दावों पर चर्चा होगी, सरकार उचित जवाब देगी।

सोमवार से शुरू हो रहे सत्र से पहले पारंपरिक सर्वदलीय बैठक के बाद रिजिजू ने कहा कि सरकार ने महीने भर चलने वाले सत्र के दौरान संसद के सुचारू संचालन में विपक्ष से सहयोग मांगा है।

केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा की अध्यक्षता में हुई बैठक के बाद रिजिजू ने संवाददाताओं से कहा कि संसद को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकार–विपक्ष के बीच समन्वय होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्होंने विपक्ष और सत्तारूढ़ एनडीए गठबंधन के सदस्यों को धैर्यपूर्वक सुना और आशा व्यक्त की कि आगामी सत्र बहुत उत्पादक होगा।

आज की सर्वदलीय बैठक में विभिन्न दलों के 54 नेताओं और निर्दलीय सांसदों ने भाग लिया।

रिजिजू ने ज़ोर देकर कहा, ष्हम ऑपरेशन सिंदूर जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के लिए पूरी तरह तैयार हैं। ये राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे हैं। सरकार न तो पीछे हट रही है और न ही कभी हटेगी, बल्कि नियमों और परंपराओं के दायरे में चर्चा के लिए तैयार है।ष

उन्होंने कहा कि सरकार नियम और परम्परा को महत्व देती है। बैठक में उठाए गए मुद्दों को दोनों सदनों की कार्य मंत्रणा समिति में उठाया जाएगा, जहां अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

Helpline

पुलिस स्टेशन	
बाग-ए-बहू	2459777
बख्शी नगर	2580102
बस स्टैंड	2575151
शहर	2543688
गांधी नगर	2430528
गंग्याल	2482019
नौबाद	2571332
पक्का डांगा	2548610
रेलवे स्टेशन	2472870
सैनिक कॉलोनी	2462212
सतवारी	2430364
चन्नी हिम्मत	2465164
ट्रांसपोर्ट नगर	2475444
त्रिकुटा नगर	2475133
गांधी नगर	2459660
एसएसपी शहर	2561578
एसपी शहर उत्तर	2547038
एसपी दक्षिण	2433778
सार्वजनिक उपयोगिता सेवाएँ	
इंडियन एयर लाइन्स	
शहर कार्यालय	2542735
एयर पोर्ट	2430449
जेट एयर वेज़	2453999
सिटी ऑफिस	2573399
रेलवे	
रेलवे पूछताछ	131, 132, 2476407
बुकिंग	2470318
आरक्षण	2470315

पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग स्टेशन	
बख्शी नगर	2543557
गांधी नगर	2430786
कंपनी बाग	2542582
नया प्लॉट	2573429
पंजतीर्थी	2547537
दूरसंचार विभाग	
डायरेक्टरी पूछताछ	197
फॉल्ट रिपेयर	198
ट्रंक बुकिंग	180
बिलिंग शिकायत	2543896
जम्मू नगर पालिका	
जं. लाइन्स	2578503
प्रशासन अधिकारी	2542192
स्वास्थ्य अधिकारी	2547440
डाक सेवाएँ	
मुख्य डाकघर शहर	2543606
गाँधी नगर	2435863
अग्निशमन सेवाएँ	
नियंत्रण कक्ष	101,132, 2476407
शहर	2544263
गाँधी नगर	2457705
नहर	2554064
गंग्याल	2480026
रसोई गैस डीलर	
चिनाब गैस	2547633
गुलमौर गैस	2430835
जैकफेड	2548297
एचपी गैस	2578456
शिवांगी गैस	2577020
तवी गैस	2548455
पावर हाउस	
गाँधी नगर	2430180
नहर रोड	2554147
जानीपुर	2533828
नानक नगर	2430776

परेड	2542289
सतवारी कैंट	2452813
अस्पताल	
जीएमसी अस्पताल	2584290
एस.एम.जी.एस. अस्पताल	2547635
सी.डी. अस्पताल	2577064
डेंटल अस्पताल	2544670
गांधी नगर अस्पताल	2430041
सरवाल अस्पताल	2579402
जी.बी. पंत कैंट अस्पताल	2433500
आयुर्वैदिक कॉलेज	2543661
सी.आर.पी. अस्पताल	2591105
आचार्य श्री चंदर	2662536
मानसिक अस्पताल	2577444
स्वामी विवेकानंद	2547418
ब्लड बैंक	2547637
एम्बुलेंस	2584225, 2575364
एम्बुलेंस (रेड क्रॉस)	2543739
नर्सिंग होम	
मददन अस्पताल	2456727
मेडिकेयर	2435070
त्रिवेणी नर्सिंग होम	2452664
सुविधा नर्सिंग होम	2555965
अल. फिरदौस नर्सिंग होम	2545050
आस्था नर्सिंग होम	2576707
बी एन चौरिटेबल ट्रस्ट	2505310
चोपड़ा नर्सिंग होम	2573580
हरबंस सिंह मेम हॉस्पिटल	2541952
जीवन ज्योति	2576985
युद्धवीर नर्सिंग होम	2547821
मीडियाएड नर्सिंग होम	2466744
सीता नर्सिंग होम	2435007
विभूति नर्सिंग होम	2547969
रामेश्वर नर्सिंग होम	2580601
बी एन चेरिटेबल	2555631
महर्षि दयानंद	2545225

ईएमआई की ज़िंदगी : इच्छाओं का मकड़जाल और मध्यमवर्गीय समाज की असली त्रासदी

भूपिंदर दीनानगर

वर्तमान समय में यदि कोई वर्ग सबसे अधिक मानसिक, आर्थिक और सामाजिक दबाव से गुजर रहा है, तो वह है मध्यमवर्ग। यह वह वर्ग है जो न तो पूरी तरह साधनहीन है और न ही पूरी तरह सम्पन्न, परंतु सबसे अधिक संघर्षशील है। आज उसकी सबसे बड़ी त्रासदी है कृ ईएमआई में बंधी हुई ज़िंदगी, जो उसे धीरे–धीरे अंदर से खोखला कर रही है।

दिखावे की दौड़ और कर्ज़ का जाल

मध्यमवर्ग आज झूठी शान के पीछे भाग रहा है। बड़ा घर, महंगी गाड़ी, ब्रांडेड कपड़े, महंगे मोबाइल फ़ोन कृ यह सब उसकी ज़रूरत नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिस्पर्धा का हिस्सा बन चुका है। इस दौड़ में वह अक्सर अपनी आय से अधिक खर्च करता है, और नतीजा होता है कृ कर्ज़, लोन और अंतहीन किश्तें।

आर्थिक संस्थानों और बैंकों ने इस मानसिकता को भली–भांति समझ लिया है। "सिर्फ ध्0 डाउन पेमेंट", "12 आसान किस्तों में" जैसे प्रलोभन देकर वे मध्यमवर्गीय नागरिक को उस जाल में फंसा देते हैं, जिससे बाहर निकलना आसान नहीं होता। वे घर से लेकर जूते तक किश्तों पर लेने लगते हैं। और यहीं से शुरू होती है उनकी ईएमआई वाली ज़िंदगी, जिसमें हर महीने की 5 तारीख़ को वे तनख्वाह का इंतज़ार नहीं, बल्कि ईएमआई चुकाने की चिंता करते हैं।

भीतर की उदासी, बाहर की मुस्कान

बाहर से यह ज़िंदगी आकर्षक दिखती है। सोशल मीडिया पर चमकते चेहरे, लग्ज़री जीवनशैली की तस्वीरें। परंतु असल में वह हर महीने एक मानसिक दबाव झेल रहा होता है। हर चुकाई गई किश्त के साथ उसे लगता है कि उसका बोझ कम हो रहा है, जबकि सच्चाई यह है कि हर किश्त के साथ उसकी ज़िंदगी का एक हिस्सा और खर्च हो जाता है।

युवाओं की दिशा बदलती सोच

यही मानसिकता आज के युवाओं को विदेश की ओर भी धकेल रही है। वे सुकून की तलाश में बड़े शहरों और फिर विदेशों में जा रहे हैं, जहां उन्हें और बड़ी ईएमआई और टैक्स का जाल मिलता है। नतीजा कृ न सुकून मिलता है, न ही अपनों का साथ। जब वे लौटने की सोचते हैं, तब तक जीवन की सबसे कीमती घड़ियाँ पीछे छूट चुकी होती हैं।

समाधानरू संतुलन और सजगता

आज आवश्यकता है संतुलन की, विवेकपूर्ण खर्च की और अपनी सीमाओं को समझने की। दिखावे की इस होड़ से बाहर निकलना ही सच्ची स्वतंत्रता है। अपनी कमाई को सोच–समझकर खर्च करना, रिश्तों को प्राथमिकता देना, और अपनी इच्छाओं को साधनों के अनुरूप सीमित करना ही मानसिक शांति की कुंजी है।

निष्कर्ष

मध्यमवर्ग को यह समझना होगा कि सच्चा सुख महंगी चीज़ों में नहीं, बल्कि सादगी, संत.ुलन और आत्मसम्मान में है। यदि हम अपने बच्चों को बेहतर भविष्य देना चाहते हैं, तो उन्हें इस ईएमआई संस्कृति से बचाना होगा। यही राष्ट्र निर्माण की दिशा में पहला सकारात्मक कदम होगा।

लेखक : भूपिंदर दीनानगर
शिक्षक एवं उपाध्यक्ष, शहीद भगत सिंह
वेलफेयर सोसाइटी
मो. 9592315923

नगरी नरोट अड्डे के समीप पशुपतिनाथ शिव मंदिर में जंगमो द्वारा सावन माह के उपलक्ष्य में शिव कथा का किया गया आयोजन

सबका जम्मू कश्मीर

नगरी, क़स्बा नगरी के नगरी नरोट अड्डे के साथ स्थित प्रसिद्ध पशुपतिनाथ शिव मंदिर में रविवार को शिव भगत जंगमो की ओर से सावन माह के पावन अवसर पर शिव कथा का भव्य आयोजन किया गया। इस धार्मिक कार्यक्रम में कस्बे और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और भगवान शिव की महिमा का श्रवण किया। शिव कथा का वाचन शिव भगत जंगमो द्वारा किया गया, जिन्होंने भगवान शिव के विभिन्न रूपों, उनकी लीलाओं और भक्तों पर कृपा की कथाओं का प्रभावशाली वर्णन किया। इस मौके पर शिव विवाह की झलकियां भी प्रस्तुत की गईं, जिन्हें देखकर श्रद्धालु भाव–विभोर हो उठे। यह दृश्य मंदिर परिसर में एक अलौकिक वातावरण निर्मित कर गया। कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने शहर–हर महादेवश और शबोल बमश के जयघोषों से माहौल को भक्तिमय बना दिया। मंदिर प्रांगण पूरी तरह से आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर रहा।

इस अवसर पर जंगमो के पदा.धिकारी, स्थानीय गणमान्य व्यक्ति, समाजसेवी और बड़ी संख्या में आम नागरिक उपस्थित रहे। शिव कथा के समापन पर सोमवार को विशाल भंडारे का आयोजन भी किया गया।

जम्मू-कश्मीर में नौकरी चाहने वालों को ठगने के आरोप में तीन धोखेबाजों पर मामला दर्ज

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : जम्मू–कश्मीर पुलिस की अपराध शाखा ने कई नौकरी चाहने वालों से लगभग 1.50 करोड़ रुपये की ठगी करने के आरोप में धोखेबा.जों के खिलाफ तीन अलग–अलग मामले दर्ज किए हैं।

जम्मू अपराध शाखा के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बेनाम तोष ने बताया कि अलग–अलग शिकायतों के आधार पर आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

उन्होंने कहा, ष्नौकरी घोटाले में शामिल कुख्यात तत्वों के खिलाफ कानून के तहत कड़ी कार्रवाई की जा रही है, लेकिन नौकरी चाहने वालों, उनके माता–पिता और अभिभावकों को भी ऐसे धोखेबाजों से सावधान रहने की आवश्यकता है।ष

उन्होंने बताया कि छह पीड़ितों द्वारा दी गई दो लिखित शिकायतों के आधार पर डोडा के सुंगली गांव निवासी अजय कुमार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। पीड़ितों ने दावा किया है कि कुमार ने सरक.ारी नौकरी दिलाने के नाम पर उनसे 1.06 करोड़ रुपये ठग लिए।

अधिकारी ने बताया कि कुमार ने नौकरी चाहने वालों का विश्वास जीतने के लिए खुद को सचिवालय का अधिकारी बताया था। उन्होंने बताया कि वह एक कुख्यात धोखेबाज है और उसके खिलाफ लगातार शिकायतें आ रही हैं।

उन्होंने बताया कि लोअर गढ़ी गढ़ जम्मू के नौ शिकायतकर्ताओं की संयुक्त शिकायत पर जम्मू के निलंबित सरकारी स्कूल शिक्षक जमील अंजुम के खिलाफ एक और प्राथमिकी दर्ज की गई है।

जेकेएलए-नेवा परियोजना पर उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन, विधानसभा अध्यक्ष की अध्यक्षता में हुई चर्चा

सबका जम्मू कश्मीर

श्रीनगर : श्रीनगर विधानसभा परिसर में आज विधानसभा अध्यक्ष जनाब अब्दुल रहीम राथर की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य जम्मू और श्रीनगर स्थित विधानसभा परिसरों में जेकेएलए – नेवा परियोजना के क्रियान्वयन को लेकर चर्चा करना था।

यह 15 करोड़ रुपये की परियोजना जम्मू–कश्मीर विधानसभा और सरकारी कार्यालयों में कागजरहित (पेपरलेस) कामकाज को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की जा रही है, ताकि शासन में पारदर्शिता और दक्षता लाई जा सके। बैठक में समिति के अन्य सदस्य दृ न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) हुस्नैन मसूदी, निज़ामुद्दीन भट, तनवीर सादिक और डॉ. सुनील भारद्वाज (सभी विधायक) भी उपस्थित रहे।

इसके अलावा भारत सरकार और जम्मू–कश्मीर प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में शामिल हुए और परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की।

संसद में नहीं गूंजी जनता की आवाज, पहलगाम त्रासदी और सिंदूर एक्शन पर देश को मिला मौन

आई. डी. खजूरिया

नई दिल्ली, संसद भवन में देश की जनता की उम्मीदें कुछ अलग थीं। उन्हें प्रतीक्षा थी कि उनके जनप्रति.निधि विशेषकर प्रधानमंत्री से सीधे, स्पष्ट और जिम्मेदार संवाद होगाकृखासकर उस त्रासदी पर जिसने देश की आत्मा को झकझोर दिया था।

22 अप्रैल 2025 को जम्मू–कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम में दिनदहाड़े 28 निर्दोष नागरिकों को गोलियों से भून दिया गया। यह एक ऐसी त्रासदी थी जिसने देशभर में गुस्सा और शोक की लहर दौड़ा दी। पर आज, जब यह मुद्दा संसद में उठाया जाना था, और देश की जनता को उनके चुने हुए प्रतिनिधियों के ज़रिए जवाब मिलना था, तब संसद मौन रही।

सभी को प्रतीक्षा थी कि प्रधानमंत्री स्वयं संसद में इस पर वक्तव्य देंगे, देश को आश्वस्त करेंगे और विपक्ष के सवालों का जवाब देंगे। लेकिन प्रधानमंत्री श्रीमान नरेंद्र मोदी ने संसद भवन के भीतर कुछ न कहकर बाहर मीडिया से मात्र 18 मिनट की बातचीत में पूरा विषय निपटा दिया। यह न केवल संसदीय परंपराओं का उल्लंघन माना जा रहा है, बल्कि देश की जनता के प्रति असंवेदनशीलता भी प्रतीत हुई।

85 दिन बाद, जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने प्रेस कांफ्रेंस कर स्वीकार किया कि पहलगाम हमले के लिए राज्य प्रशासन की ष्बहुत बड़ी चूकष जिम्मेदार थी और उन्होंने पूर्ण जिम्मेदारी ली। इसके पश्चात 7 से 10 मई तक देश की सेनाओं ने षसिंदूर एक्शनष नाम से एक सैन्य अभियान चलाया, जिसे संसद, राजनीतिक दलों और आम जनता का भरपूर समर्थन मिला।

हालांकि इस सैन्य कार्रवाई के दौरान भी जम्मू–कश्मीर के कई गांवों और कस्बों में नागरिकों और जवानों की शहादत की खबरें आईं। कई परिवार उजड़ गए। इन पर भी संसद में कोई विस्तृत चर्चा नहीं हुई।

इससे भी अधिक गंभीर विषय यह रहा कि अंतरराष्ट्रीय दबाव, विशेषकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के श्ट्रेड प्रेशरश के चलते यह सैन्य अभियान अचानक रोक दिया गया। यह भी एक ऐसा प्रश्न है जिसे संसद में उठाया जाना चाहिए था।

देश की सीमाओं पर रहने वाले नागरिक पीढ़ियों से बलिदान दे रहे हैं। वे आज भी देश की सेनाओं और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अटूट विश्वास रखते हैं। ऐसे में उनकी पीड़ा, उनकी आवाज संसद में गूंजनी चाहिए थी।

जनता यह जानना चाहती थीरू

पहलगाम हमले की जांच कहां तक पहुंची?

दोषियों पर क्या कार्रवाई हुई?

षसिंदूर एक्शनष के दौरान देश ने क्या खोया, क्या पाया?

क्या हम अंतरराष्ट्रीय दबाव में अपने निर्णयों को बदलने लगे हैं?

आज संसद में यह चर्चा नहीं हुई। प्रधानमंत्री ने जो कहना था, संसद के बजाय बाहर कहा। इससे देश की जनता को लगा कि उनकी आवाज और उनकी पीड़ा को संसद में वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह हकदार थी।

सीमा पर रहने वाले लोग, जो हर वक्त युद्ध और अमन के बीच झूलते रहते हैं, उन्होंने बार–बार शांति की अपील की है। वे आज भी यही कह रहे हैं कि जंग, टकराव और नफ़रत की सियासत को बंद किया जाए और उसकी जगह एक तार्किक, मानवीय और प्रकृति–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया जाए।

संसद देश की आत्मा है, और उसमें जनता की आवाज सबसे ऊपर होनी चाहिए। आज वह आवाज कहीं गुम थी।

(लेखक : आई. डी. खजूरिया)
स्थानरू कठुआ जम्मू कश्मीर

साप्ताहिक सबका जम्मू कश्मीर

जम्मू कश्मीर को जल्द से राज्य का दर्जा बहाल करें सरकार गुलाम नबी आजाद

रोहित शर्मा

कटरा : जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद गुरुवार क कटरा में अपने समर्थकों से मिले और उनके साथ बैठक भी की और वही पत्रकारों से बात करते हुए गुलाम नबी आजाद ने कहा जम्मू कश्मीर के विकास के लिए राज्य का दर्जा जरूरी है केंद्र सरकार को जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा जल्द से जल्द बाहल करना चाहिए जब हम केंद्र सरकार में मंत्री थे तो हमने तीन केंद्र शासित प्रदेशों को राज्य का दर्जा दिलवाया था जम्मू कश्मीर के लिए राज्य का दर्जा किसी वर्ग या राजनीतिक दल के लिए नहीं है यह जम्मू कश्मीर के प्रत्येक नागरिक व प्रत्येक क्षेत्र का मसला है मैंने अपनी जिंदगी में पहली बार किसी राज्य को केंद्र शासित प्रदेश बनते देखा है। जब यह मुद्दा मैं संसद में उठाया था तो गृहमंत्री अमित शाह ने यकीन दिलाया था राज्य का दर्जा दिया जाएगा उन्होंने कहा मुझे पूरी उम्मीद है कि जम्मू कश्मीर को जल्द ही राज्य का दर्जा दिया जाएगा।

आजाद ने आगे कहा मैं उपराष्ट्रपति की दौड़ में नहीं हूं यह अफगांए पता नहीं किसने चलाई है मेरी सब लोगों से अपील है कि अफ़गांहों पर ध्यान ना दें और अफगांहों को खत्म करे।

कठुआ जिले में मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कृषि विभाग की पहल

राज कुमार

कठुआ, कृषि विभाग जम्मू–कश्मीर के जिला कठुआ की इकाई द्वारा मशरूम डिवेलपमेंट स्कीम के तहत किसानों को प्रेरित करने और उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इस संबंध में जिला मशरूम विकास अधिकारी अशोक सरमाल ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में वर्षा ऋतु के अनुकूल मौसम को देखते हुए मशरूम की खेती के लिए यह समय अत्यंत उपयुक्त है।

उन्होंने बताया कि ऐसे किसान जिनके पास वातावरणुकूल कमरे उपलब्ध हैं, वे आसानी से मशरूम की खेती शुरू कर सकते हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होगी बल्कि कठुआ जिले में मशरूम उत्पादन को भी बढ़ावा मिलेगा।

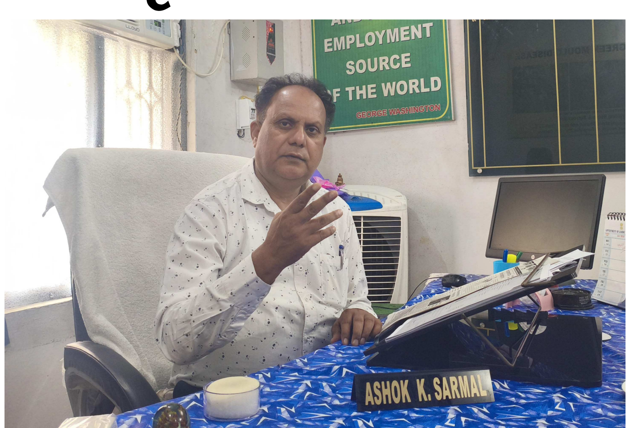

मशरूम जिला विकास अधिकारी जानकारी देते

मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कृषि विभाग की टीम मुख्य कृषि अधिकारी की देखरेख एवं दिशा–निर्देशों में कार्यरत है। विभाग द्वारा समय–समय पर किसानों को बीज और अन्य जरूरी संसाधन भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त विभाग के डेमोंस्ट्रेशन कम ट्रेनिंग सेंटर पर भी वातावरणुकूल तकनीकों की सहायता से वर्षभर बटन मशरूम का उत्पादन किया जा रहा है।

कृषि विभाग द्वारा बेरोजगार युवाओं, स्कूल और कॉलेज के छात्रों को भी मशरूम उत्पादन की विशेष ट्रेनिंग दी जा रही है, ताकि वे स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

किसानों की सुविधा हेतु मुख्य कृषि अधिकारी की देखरेख में त्रिकुटा इंटेंसिवमशरुम डेवलपमेंट कॉरिडोर, बरमाल (हीरानगर) में कम्पोस्ट निर्माण के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। यहां किसानों को सब्सिडी आधारित मशरूम बैग्स भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। यह पहल जिले में आर्थिक विकास के साथ–साथ युवाओं को रोजगार से जोड़ने की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है।

भाजपा जम्मू-कश्मीर के मोर्चो को मिले नए अध्यक्ष, विधायक राजीव जसरोटिया ने दी बधाई

राज कुमार

जसरोटा/कठुआ, भारतीय जनता पार्टी, जम्मू–कश्मीर के विभिन्न मोर्चों के लिए नव नियुक्त अध्यक्षों की घोषणा होते ही पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं में उत्साह की लहर दौड़ गई। इस अवसर पर विधायक राजीव जसरोटिया ने सभी नव नियुक्त अध्यक्षों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और उनके उज्ज्वल नेतृत्व की कामना की।

राजीव जसरोटिया ने कहा कि, आप सभी के कुशल नेतृत्व में संगठन और अधिक सशक्त, सक्रिय एवं जनसेवा के प्रति प्रतिबद्ध बने, ऐसी मेरी कामना है।ß

नव नियुक्त अध्यक्षों की सूची इस प्रकार हैरु अध्यक्ष महिला मोर्चा अधिकता नेहा महाजन, अध्यक्ष युवा मोर्चा अरुण प्रभात,अध्यक्ष ओबीसी मोर्चा बन ज्योत,अध्यक्ष एससी मोर्चा धर्मेंद्र कुमार,अध्यक्ष एसटी मोर्चा चौधरी अब्दुल गनी,अध्यक्ष किसान मोर्चा राकेश पंत व अध्यक्ष अल्पसंख्यक मोर्चा स. रणजीत सिंह नलवा

विधायक जसरोटिया ने विश्वास जताया कि ये सभी नेता पार्टी की नीतियों और विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका

निभाएंगे और संगठन को बूथ स्तर तक मजबूती देंगे। उन्होंने कहा कि यह टीम भाजपा को जम्मू–कश्मीर में नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगी

कविता

मियां बीवी की लड़ाई

राम सिंह

मियां बीवी की लड़ाई,
यह तो चलती ही रहती है।
धूप और छांव की तरह,
सदा घटती–बढ़ती रहती है।
कभी सूट को लेकर लड़ाई, तो कभी मायके जाने की लड़ाई,
इन्हीं हालातों में इंसान बन जाता है समझदार,
चूल्हे की आग में भी मीठी–मीठी तपिश जलती रहती है।
मियां बीवी की लड़ाई,
यह तो चलती ही रहती है।
मेरी तनख्वाह थोड़ी है,
गुजारा करना मुश्किल है,
ज़िंदगी की रेलगाड़ी को चलाना कौन सा आसान है?
टेढ़े–मेढ़े रास्तों पर
यह सफ़र यूं ही चलता रहता है।
मियां बीवी की लड़ाई,
यह तो चलती ही रहती है।
राम सिंह दोस्तों से यही कहता है : सूरज हमेशा उगता है और हमेशा ढलता है,
ईश्वर की बनाई यह दुनिया
हर रोज़ कुछ नया दिखाती है।
मियां बीवी की लड़ाई,
यह तो चलती ही रहती है।
धूप और छांव की तरह
यह सदा बदलती रहती है।

राम सिंह
सुर सागर संगीत सदन,
हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर : 7831032367

कविता

आया राखी का त्यौहार बालम

चाहत खुशियां बंधन प्यार।
आया राखी का त्यौहार।
सावन की पूर्णिमा उन्मेष।
आशीर्वाद देते है गणेश।
भाई बहन का इकरार।
आया राखी का त्यौहार।
बहना का तिलक स्नेह मिले।
सच्चे संकल्पों के फूल मिले।
मंगलकारी शुभ सत्कार।
आया राखी का त्यौहार।
यह दिन दृष्टि परिवर्तन का।
रिश्तों में पूजा अर्चना का।
आत्म दृष्टि में परिवार।
आया राखी का त्यौहार।
खिलते चारो और तबस्सुम।
अरुणोदय में एक तरन्नुम।
प्रतिष्ठित शानोदय गुलजार।
आया राखी का त्यौहार।
मात–पिता का अंतर्नाद मिले।
शुभ मंगल आशीर्वाद मिले।
जैसे देवालय के दीदार।
आया राखी का त्यौहार।
फसलों में दिव्य श्रृंगार।
मौसम का टूटा हंकार।
संदली मंजर है तैयार।
आया राखी का त्यौहार।
सर्द ऋतु का है अभिवादन।
संपूर्ण होता है सावन।
उमरा नहीं करती तकरार।
आया राखी का त्यौहार
अतुल्य मौसम का अभिनंदन।
अंगार पुष्प चम्पा चंदन।

अर्जित अर्पित है कचनार।
आया राखी का त्यौहार।
सब धर्मो की इस मे श्रद्धा।
शुश्रूषा होती है वर्षा।
भारत मां के यह संस्कार।
आया राखी का त्यौहार।
इस त्यौहार में आत्मतुष्टि।
सौंदर्य के प्रभाव में दृष्टि।
कृषक के भरते भण्डार।
आया राखी का त्यौहार।
देवालयों में दीप शिखा है।
चारों और रूपवान दिशा है।
उमड़ रहा स्नेह का श्रृंगार।
आया राखी का त्यौहार।
बालम खुलते मंगल द्वार।
यह दिन सब को देता प्यार।
रिश्तों का माधुर्य सभ्याचार।
आया राखी का त्यौहार।

बलविन्दर बालम गुरदासपुर
ओंकार नगर, गुरदासपुर
(पंजाब)
9815625409

छब्बे चक मोड़ पर चोरी का प्रयास, दर्जी की दुकान से नगदी और सिगरेट पैकेट चोरी

चोरी के दौरान इस्तेमाल किए गए औजार दिखाता दुकानदार

राज कुमार/सनी शर्मा

छब्बे चक/मढ़ीनरू छब्बे चक मोड़ पर गुरुवार देर रात अज्ञात चोरों ने चार दुकानों को निशाना बनाते हुए चोरी का प्रयास किया। इनमें से दर्जी की एक दुकान का ताला तोड़कर चोर दुकान में घुसने में सफल हो गए।

दुकान के मालिक हीरा लाल पुत्र गुरा राम ने बताया कि जब वह शुक्रवार सुबह दुकान पर पहुंचे, तो ताला टूटा हुआ मिला और दुकान में रखी लगभग रू 5000 की नगदी और सिगरेट की कुछ डिब्बियाँ गायब थीं। उन्होंने तुरंत इस घटना की सूचना पुलिस को दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई है।

स्थानीय नागरिक अनिल कुमार, राकेश कुमार और सोनू ने बताया कि क्षेत्र में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति के चलते चोरियों की घटनाएं बढ़ रही हैं।

उन्होंने कहा कि दिन–रात नशे की हालत में युवक सड़कों पर घूमते रहते हैं, जिससे आमजन में असुरक्षा का माहौल बन गया है।

चोरों ने अन्य तीन दुकानों के ताले भी तोड़ने की कोशिश की, लेकिन वे सफल नहीं हो सके। लगातार बढ़ रही चोरी की घटनाओं को लेकर लोगों ने प्रशासन से क्षेत्र में रात्रि गश्त बढ़ाने और जल्द से जल्द चोरों को गिरफ्तार करने की मांग की है।

हतिकसा और विशाल को शादी की पहली सालगिरह की ढेरों शुभकामनाएँ।

ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम के तहत जिला सूचना केंद्र कठुआ में पौधारोपण, डीआईओ राजिंदर डिगरा व स्टाफ ने बढ़-चढ़कर लिया भाग

जिला सूचना विभाग में डीआईओ राजिंदर डिगरा के कठुआ सूचना विभाग के कर्मचारी पौधेरोपण करते हुए

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ, जिला सूचना केंद्र कठुआ में आज ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम के तहत पौधारोपण अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिला सूचना अधिकारी राजिंदर डिगरा (झ्रौ) व केंद्र के समर्पित स्टाफ सदस्यों ने विभिन्न प्रकार के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

डीआईओ राजिंदर डिगरा ने इस पहल को समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि हर नागरिक को अपने स्तर पर पर्यावरण बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि पौधे न केवल पर्यावरण को स्वच्छ रखते हैं बल्कि आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ जीवन भी प्रदान करते हैं।

इस दौरान केंद्र के सभी अधिक. ारी व कर्मचारी मौजूद रहे और सभी ने अभियान में बढ़–चढ़कर भाग लिया। मौके पर कर्मचारियों ने संकल्प लिया कि वे नियमित रूप से लगाए गए पौधों की देखभाल करेंगे।

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर
"पत्रकारों की आवश्यकता"
'सबका जम्मू कश्मीर' हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र
के लिए जम्मू कश्मीर के सभी जिला के लिए पत्रकारों की आवश्यकता है इच्छुक पत्रकार संपर्क करें
योग्यता:
- पत्रकारिता में अनुभव
- उत्कृष्ट लेखन और संपादन कौशल
- सोशल मीडिया घराने में काम करने का अनुभव
अपना बायोडाटा ई.मेल करें
sabkajammukashmir@gmail.com
संपर्क नंबर :
6005134383

निमिषा प्रिया केस में सरकार क्या कर रही है? विदेश मंत्रालय ने बताई एक-एक बात

नई दिल्ली

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने गुरुवार को प्रेस ब्रीफिंग में कई मुद्दों पर जानकारी दी. उन्होंने यमन में निमिषा प्रिया की फांसी के मामले, रूस से तेल खरीदने वाले देशों से जुड़ी नाटो प्रमुख की टिप्पणी, भारत–अमेरिका ट्रेड डील और अमेरिका से डिपोर्ट किए गए भारतीयों के मामले पर जानकारी दी. निमिषा के मामले में उन्होंने बताया किभारत सरकार हर संभव मदद दे रही है. हमने कानूनी मदद दी है. परिवार की मदद के लिए एक वकील नियुक्त किया है.

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, इस मुद्दे को सुलझाने के लिए हम स्थानीय अधिकारियों और उसके परिवार के संपर्क में भी हैं.

पिछले कुछ दिनों में इस मामले में समाधान तक पहुंचने के लिए और समय देने के लिए कई प्रयास किए गए हैं. हम मामले पर बारीकी से नजर रखते रहेंगे. इसके साथ ही हर संभव मदद देंगे. इस मामले में हम कुछ मित्र देशों के संपर्क में भी हैं.

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने नाटो प्रमुख की टिप्पणी 'रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर कड़े प्रतिबंध लगा सकते हैं' पर भी जवाब दिया.

उन्होंने कहा किहमने इस विषय पर रिपोर्ट देखी हैं.

मामले पर पैनी नजर बनाए हुए हैं. मैं फिर से कहना चाहता हूं कि हमारे लोगा. ें की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है.

इस मामले में हम किसी भी दोहरे मापदंड के प्रति विशेष रूप से आगाह करेंगे. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने प्रेस ब्रीफिंग में ये भी बताया कि 20 जनवरी से लेकर 16 जुलाई तक कितने भारतीय डिपोर्ट किए गए हैं.

उन्होंने बताया किइस साल 20 जनवरी से लेकर कल तक करीब 1 हजार 563 भारतीय नागरिकों को अमेरिका से वापस भेजा जा चुका है. इनमें से ज्यादार भारतीय नागरिक कमर्शियल फ्लाइट से आए हैं. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने भारत–अमेरिका ट्रेड डील पर भी जानक. ारी दी. उन्होंने बताया कि इस मामले को लेकर दोनों पक्षों के बीच बातचीत चल रही है. इसके साथ ही अमेरिका में एक गंभीर मामले में कथित तौर पर गिरफ्तार किए गए भारतीय नागरिक के केस में उन्होंने बताया कि ये कानून से जुड़ा मामला है.

साप्ताहिक
सबका जम्मू कश्मीर

स्वतंत्रता दिवस 2025 को लेकर कठुआ प्रशासन सतर्क, तैयारियों की एडीडीसी ने ली समीक्षा बैठक

मुख्य समारोह स्पोर्ट्स स्टेडियम कठुआ में, सुरक्षा व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की तैयारियों को दि गति

सबका जम्मू कश्मीर

कठुआ : स्वतंत्रता दिवस 2025 के भव्य आयोजन को लेकर कठुआ जिला प्रशासन ने कमर कस ली है। इसी क्रम में मंगलवार अतिरिक्त जिला विकास आयुक्त (एडीडीसी) सुरिंदर मोहन की अध्यक्षता में एक अहम बैठक आयोजित की गई, जिसमें 15 अगस्त के मुख्य कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की गई।

बैठक में बताया गया कि स्वतंत्रता दिवस का मुख्य आयोजन इस बार कठुआ के स्पोर्ट्स स्टेडियम में किया जाएगा। मुख्य अतिथि यहां राष्ट्रीय ध्वज फहराकर परेड की सलामी लेंगे। परेड में जम्मू–कश्मीर पुलिस, सेना, अर्धसैनिक बल, वन सुरक्षा बल, एनसीसी और विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों के छात्र–छात्राएं भाग लेंगे। पीटीएस और सेना के बैंड भी समारोह में रंग भरेंगे।

एडीडीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि समारोह स्थल पर मरम्मत, बैरिकेडिंग, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, स्वच्छता, बैठने की व्यवस्था, सहित सभी व्यवस्थाएं समय रहते पूरी की जाएं। साथ ही सरकारी इमारतों को रोशनी से सजाने के भी निर्देश दिए गए।

उन्होंने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत डीसी और एसएसपी कार्यालयों में शहनाई वादन से होगी, जिसे सूचना विभाग की टीम प्रस्तुत करेगी।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के लिए तहसीलदार मुख्यालय और मुख्य शिक्षा अधिकारी कठुआ को निर्देश दिए गए कि वे स्कूल–कॉलेजों से बेहतरीन प्रस्तुतियों का चयन करें, जो देश की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाएं।

एडीडीसी ने ध्वजारोहण, स्वच्छता अभियान और पौधारोपण जैसे कार्यक्रमों को भी सफलतापूर्वक आयोजित करने पर बल दिया और सभी विभागों को निर्देशित किया कि वे आपसी तालमेल से काम करें और सभी तैयारियां समय पर पूरी करें ताकि राष्ट्रीय पर्व को गरिमामय और सफल बनाया जा सके। बैठक में एडीसी कठुआ विश्वप्रताप सिंह, एएसपी राहुल चढ़ाक, सीपीओ रणजीत ठाकुर, सीएमओ डॉ. विजय रैना सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशकः राज कुमार द्वारा एम/एस डी. आर प्रिंटिंग प्रेस, बैन बजाल्ता, तहसील जम्मू से मुद्रित एवं नगरी पैरोल नगरी, जिला कठुआ, जम्मू और कश्मीर पिन.कोड नं: 184151 | संपादकः राज कुमार